## Resource: Open Hindi Contemporary Version

**Open Hindi Contemporary Version** (Hindi) is based on: Hindi Contemporary Version Bible, Biblica, Inc, 2019, which is licensed under a CC BY-SA 4.0 license.

This PDF version is provided under the same license.

# Open Hindi Contemporary Version

## Judges 1:1

1 यहोशू की मृत्यु के बाद इस्राएलियों ने याहवेह से यह प्रश्न
किया, “कनानियों से युद्ध करने सबसे पहले किसका जाना
सही होगा?”

2 याहवेह ने उत्तर दिया, “सबसे पहले यहूदाह जाएगा; यह
याद रहे कि यह जगह मैंने उसके अधिकार में दे दी है.”

3 यहूदाह वंशजों ने अपने भाई शिमओन वंशजों से कहा, “हमें
दी गई जगह में आ जाओ, कि हम कनानियों से युद्ध करें तथा
समय आने पर मैं तुम्हें दी गई जगह में आकर युद्ध करूंगा.”
शिमओन वंशज इसके लिए राज़ी हो गये.

4 यहूदाह वंशजों ने आक्रमण किया और याहवेह ने कनानी
और परिज्ज़ी उनके अधीन कर दिए, बेज़ेक में उन्होंने दस
हज़ार सैनिकों को मार गिराया.

5 बेज़ेक में उन्होंने अदोनी-बेज़ेक से युद्ध किया और कनानियों
तथा परिज्ज़ियों को मार दिया;

6 मगर अदोनी-बेज़ेक भाग निकला, उन्होंने उसका पीछा
किया, उसे पकड़ लिया और उसके हाथों और पैरों के अंगूठे
काट दिए.

7 अदोनी-बेज़ेक ने उनसे कहा, “सत्तर राजा, जिनके हाथ-पैर
के अंगूठे काट दिए गए होते थे, मेरी मेज़ की चूर-चार इकट्ठा
करते थे. परमेश्वर ने मेरे द्वारा किए गए काम का बदला मुझे दे
दिया है.” वे उसे येरूशलेम ले आए, जहां उसकी मृत्यु हो गई.

8 तब यहूदाह गोत्रजों ने येरूशलेम पर हमला किया, उसे
अपने अधीन कर लिया, उसके निवासियों को तलवार से मार
दिया और नगर में आग लगा दी.

9 इसके बाद यहूदाह गोत्रज उन कनानियों से युद्ध करने
निकल पड़े, जो नेगेव के पहाड़ी इलाकों में तथा तराई में रह
रहे थे.

10 सो यहूदाह ने उन कनानियों पर हमला कर दिया, जो हेब्रोन
में रह रहे थे. हेब्रोन का पुराना नाम किरयथ-अरबा था. उन्होंने
शेशाइ, अहीमान और तालमाई को हरा दिया.

11 इसके बाद वे वहां से दबीर निवासियों की ओर बढ़े; दबीर
का पुराना नाम किरयथ-सेफेर था.

12 कालेब ने घोषणा की, “जो कोई किरयथ-सेफेर पर
आक्रमण करके उसे अपने अधीन कर लेगा, मैं उसका विवाह
अपनी पुत्री अक्सा से कर दूंगा.”

13 कालेब के छोटे भाई केनज़ के पुत्र ओथनीएल ने किरयथ-
सेफेर को अधीन कर लिया, तब कालेब ने उसे अपनी पुत्री
अक्सा उसकी पत्नी होने के लिए दे दी.

14 विवाह होने के बाद जब अक्सा अपने पति से बात कर रही
थी, उसने उसे अपने पिता से एक खेत मांगने के लिए कहा.
जब वह अपने गधे पर से उतर गई, तब कालेब ने उससे पूछा,
“तुम्हें क्या चाहिए?”

15 उसने उत्तर दिया, “मुझे आपके आशीर्वाद की ज़रूरत है!
जैसे आप मुझे नेगेव क्षेत्र दे ही चुके हैं, और यदि हो सके तो
वैसे मुझे जल के सोते भी दे दीजिए.” तब कालेब ने उसे ऊपर
का सोता, नीचे का सोता दोनों दे दिया.

16 मोशेह के ससुर के वंशज अर्थात् केनीवासी खजूर वृक्षों के
नगर से यहूदिया के लोगों के साथ यहूदिया के निर्जन प्रदेश
के इलाके में चले गए. यह जगह अराद के पास दक्षिण में है. वे
वहां के निवासियों के साथ ही बस गए.

*Judges 1:1*

17 तब यहूदाह वंशजों ने अपने भाई शिमओन वंशजों के साथ
जाकर सेफथ में निवास कर रहे कनानियों को मार दिया, और
नगर का पूरा विनाश कर दिया. सो इस नगर का नाम होरमाह
पड़ गया.

18 यहूदाह ने अज्जाह, अश्कलोन तथा एक्रोन नगरों को इनकी
सीमा सहित अपने अधीन कर लिया.

19 याहवेह यहूदाह की ओर थे, उन्होंने पहाड़ी इलाके को
अपने अधीन कर लिया; किंतु वे घाटी के रहनेवालों को
निकाल न सके, क्योंकि उनके पास लोहे के रथ थे.

20 उन्होंने कालेब को हेब्रोन दे दिया, जैसी मोशेह ने उनसे
प्रतिज्ञा की थी. कालेब ने वहां से अनाक के तीन पुत्रों को खदेड़
दिया था.

21 मगर बिन्यामिन के वंशजों ने येरूशलेम में रह रहे यबूसियों
को वहां से नहीं निकाला. परिणामस्वरूप यबूसी आज तक
बिन्यामिन के वंशजों के साथ येरूशलेम में ही रह रहे हैं.

22 इसी तरह योसेफ़ के परिवार ने बेथेल पर हमला कर दिया.
याहवेह उनकी ओर थे.

23 योसेफ़ के परिवार ने बेथेल का भेद लिया. बेथेल नगर का
पुराना नाम लूज़ था.

24 भेद लेने गए जासूसों ने नगर से बाहर आ रहे एक व्यक्ति
को देखा. उन्होंने उससे विनती की, “कृपया हमें नगर में जाने
का रास्ता दिखाएं. हम तुम पर कृपा करेंगे.”

25 सो उसने उन्हें नगर में जाने का रास्ता दिखा दिया. उन्होंने
पूरे नगर को तलवार से मार दिया, मगर उस व्यक्ति और
उसके परिवार को छोड़ दिया.

26 वह व्यक्ति हित्तियों के देश में चला गया, जहां एक नगर
बसाया गया, जिसका नाम उसने लूज़ रखा, जिसे आज तक
इसी नाम से जाना जाता है.

27 मगर मनश्शेह ने न तो बेथ-शान और इसके गांवों को अपने
अधीन कर लिया और न ही तानख और इसके गांवों को, न
दोर तथा इसके निवासियों और इसके गांवों को, न इब्लीम
और इसके निवासियों और गांवों को, न मगिद्दो और इसके
निवासियों और गांवों को. इस कारण कनानी निडर होकर
उस देश में रहते रहे.

28 तब वह समय भी आया, जब इस्राएली सामर्थ्यी हो गए. तब
उन्होंने कनानियों को जबरन मजदूरी पर तो लगा दिया और
उन्हें पूरी रीति से न निकाला.

29 गेज़ेर में रह रहे कनानियों को एफ़्राईम के वंशजों ने नहीं
निकाला. इस कारण कनानी गेज़ेर में उन्हीं के बीच रहते रहे.

30 ज़ेबुलून ने कितरोनवासियों को नहीं निकाला और न
नहलोलवासियों को, इस कारण कनानी उनके बीच में रहते
रहे और उन्हें जबरन मज़दूर बनना पड़ा.

31 आशेर ने न तो अक्को के, न सीदोन के, न अहलाब के, न
अकज़ीब के, न हेलबा के, न अफेक के, न रेहोब के निवासियों
को निकाला.

32 इस कारण अशेरी कनानियों के बीच में ही रहते रहे, जो इस
क्षेत्र के मूल निवासी थे. उन्हें बाहर निकाला ही न गया था.

33 नफताली ने बेथ-शेमेश के निवासियों को नहीं निकाला,
और न ही बेथ-अनात के निवासियों को. वे कनानियों के बीच
में ही रहते रहे, जो इस देश के मूल निवासी थे. बेथ-शेमेश तथा
बेथ-अनात के निवासी उनके लिए जबरन मज़दूर होकर रह
गए.

34 इसके बाद अमोरियों ने दान के वंशजों को पहाड़ी इलाके
में रहने के लिए मजबूर कर दिया, क्योंकि अमोरियों ने उन्हें
घाटी में प्रवेश करने ही न दिया.

35 अमोरी अय्जालोन तथा शआलबीम में हेरेस पर्वत पर
जबरन रहते रहे, मगर जब योसेफ़ के वंशज सामर्थ्यी हो गए,
तब इन्हें भी जबरन उनका मज़दूर हो जाना पड़ा.

36 अमोरियों की सीमा अक्रब्बीम की चढ़ाई से शुरू होकर
सेला होते हुए ऊपर की ओर बढ़ती है.

*Judges 2:1*

## Judges 2:1

1 याहवेह का दूत गिलगाल से बोकीम आया. उसने उनसे
कहा, “तुम्हें मिस्र देश से निकालकर मैं उस देश में ले आया
हूं, जिसकी शपथ मैंने तुम्हारे पूर्वजों से की थी. मैंने कहा था,
‘तुमसे की गई अपनी वाचा मैं कभी न तोड़ूंगा.

2 तुमसे आशा यह की गई थी कि तुम इस देश के मूल
निवासियों से कोई वाचा न बांधोगे. तुम उनकी वेदियां तोड़
डालोगे.’

3 इस कारण मैंने यह भी कहा, ‘मैं उन्हें तुम्हारे सामने से न
निकालूंगा. वे तुम्हारे पंजर के कांटे हो जाएंगे तथा उनके देवता
तुम्हारे लिए फंदा.’ ”

4 जब याहवेह के दूत ने सारे इस्राएल के वंश से यह कहा, लोग
ऊंची आवाज में रोने लगे.

5 इस कारण उन्होंने उस स्थान नाम बोकीम रखा. उन्होंने वहां
याहवेह को बलि चढ़ाई.

6 जब यहोशू सभा को विदा कर चुके, इस्राएल के वंश अपनी-
अपनी मीरास को लौट गए, कि वे देश को अपने अधीन कर
लें.

7 ये यहोशू तथा यहोशू के बाद पुरनियों के सारे जीवन में
याहवेह की सेवा और स्तुति करते रहे. ये उन सभी महान
कामों के चश्मदीद गवाह थे, जो याहवेह द्वारा इस्राएल की
भलाई के लिए किए गए थे.

8 याहवेह का दास यहोशू, नून के पुत्र की मृत्यु हो गई. इस
समय उनकी उम्र एक सौ दस वर्ष की थी.

9 उन्होंने उन्हें उन्हीं की मीरास की सीमा के अंदर तिमनथ-
हेरेस में गाड़ दिया. यह स्थान गाश पर्वत के उत्तर में एफ्राईम
के पहाड़ी इलाके में है.

10 वह सारी पीढ़ी भी अपने पुरखों के साथ मिट्टी में जा मिली.
उसके बाद एक नई पीढ़ी का उदय हुआ, जिसे न तो याहवेह
का ज्ञान था, न ही उन्हें यह मालूम था कि याहवेह ने इस्राएल
की भलाई के लिए क्या-क्या किया था.

11 इस्राएल के वंशजों ने वह किया, जो याहवेह की नज़र में
गलत है. उन्होंने बाल की उपासना शुरू कर दी.

12 उन्होंने अपने पुरखों के परमेश्वर, याहवेह को, जो उन्हें मिस्र
देश से निकाल लाए थे, छोड़ दिया. उन्होंने उन देवताओं का
अनुसरण करना शुरू कर दिया, जो उन लोगों के देवता थे,
जो उनके आस-पास रह रहे थे. वे उन्हीं देवताओं की उपासना
करने लगे. यह करके उन्होंने याहवेह का क्रोध भड़का दिया.

13 उन्होंने याहवेह को छोड़कर बाल तथा अश्तोरेथ की
उपासना शुरू कर दी.

14 इस्राएल पर याहवेह का क्रोध भड़क उठा. याहवेह ने उन्हें
उनके अधीन कर दिया, और वे उन्हें लूटने लगे. याहवेह ने
उन्हें उनके शत्रुओं के हाथों में बेच दिया, जो उनके आस-पास
रहते थे. इस कारण वे अपने शत्रुओं के सामने ठहर न सके.

15 वे जहां कहीं जाते, याहवेह का हाथ उनकी हानि ही के लिए
उठा रहता था. यह सब वही था, जिसकी चेतावनी याहवेह दे
चुके थे, जिसकी शपथ याहवेह ले चुके थे. इस्राएली बड़ी
मुश्किल में आ पड़े थे.

16 तब याहवेह ने न्यायियों का उदय किया. इन न्यायियों ने
इस्राएल के वंशजों को उन लोगों से छुड़ाया, जो उनके साथ
लूटपाट कर रहे थे.

17 इतना होने पर भी उन्होंने अपने प्रशासकों की आज्ञाओं का
पालन नहीं किया. वे पराए देवताओं की उपासना करने के
द्वारा परमेश्वर के विरुद्ध व्यभिचार, अर्थात् विश्वासघात, करते
रहे. याहवेह के आदेशों का पालन करने की अपने पूर्वजों की
नीतियों से वे जल्द ही दूर हो गए. उन्होंने अपने पूर्वजों के
समान व्यवहार करना छोड़ दिया.

18 जब कभी याहवेह ने उनके लिए प्रशासक का उदय किए,
याहवेह उस प्रशासक के साथ साथ रहे और वह प्रशासक
जीवन भर उन्हें उनके शत्रुओं से छुटकारा दिलाया करता था;
इसलिये कि याहवेह उनके शत्रुओं द्वारा उन पर की जा रही
ताड़ना से हुई पीड़ा की कराहट के कारण, करुणा से दुःखी
हो जाते थे.

*Judges 3:1*

19 मगर होता यह था, कि जब उस प्रशासक की मृत्यु होती थी,
वे पराए देवताओं का अनुसरण करने के द्वारा, उनकी
उपासना करने के द्वारा तथा उनके सामने झुककर नमन
करने के द्वारा अपने पुरखों से कहीं अधिक बुराई करने में
लौट जाते थे. न तो उन्होंने अपने इन बुरे कामों को छोड़ा, न
ही अपने हठीले स्वभाव को.

20 इस पर इस्राएल के विरुद्ध याहवेह का क्रोध भड़क उठा.
याहवेह ने विचार किया "इसलिये कि इस देश ने मेरी उस
वाचा का उल्लंघन किया है, जिसकी आज्ञा मैंने उनके पुरखों
को दी थी, उन्होंने मेरे आदेश का भी उल्लंघन किया है,

21 मैं उन जनताओं को भी उनके सामने से नहीं निकालूंगा,
जिन्हें यहोशू अपनी मृत्यु के पहले छोड़ गए थे.

22 मैं उन देशों के द्वारा इस्राएल को परखूं, कि वे अपने पुरखों
के समान याहवेह के आदेशों का पालन करते हैं, या नहीं."

23 इस कारण याहवेह ने ही उन जनताओं को वहां रहने दिया
तथा उन्हें वहां से जल्द ही नहीं निकाला. याहवेह ने इन्हें यहोशू
के अधीन भी न होने दिया था.

## Judges 3:1

1 उन जनताओं को याहवेह ने नहीं हटाया कि याहवेह इनके
द्वारा इस्राएल की नयी पीढ़ी को, जो कनान के किसी भी युद्ध
में शामिल नहीं हुए थे, परख सके,

2 और उन्हें युद्ध की कला में शिक्षित किया जा सके, जिन्हें
इसके पहले युद्ध का कोई अनुभव न हो सका था.

3 वे जनता ये थे: फिलिस्तीनी, (जिनका शासन पांच नगरों में
बंट कर हो रहा था), बाल-हरमोन पर्वत से लेकर लबो-हामाथ
तक लबानोन पर्वत पर रह रहे सभी कनानी, सीदोनी तथा
हिव्वी.

4 ये सभी इस्राएल को परखने के लिए रखे गए थे, कि यह स्पष्ट
हो जाए, कि वे याहवेह के आदेशों, जो उनके पुरखों को
याहवेह ने मोशेह के द्वारा दिए थे, उनका पालन करते हैं या
नहीं.

5 इस्राएल के वंशज कनानी, हित्ती, अमोरी, परिज्ज़ी, हिव्वी
तथा यबूसियों के बीच रहते रहे.

6 वे उनकी बेटियों को अपनी पत्नी बनाने के लिए ले लेते थे,
तथा अपनी बेटियों को उनके बेटों को दे दिया करते थे, तथा
उनके देवताओं की सेवा-उपासना भी करते थे.

7 इस्राएल वंशजों ने वह किया, जो याहवेह की नज़र में बुरा
था. उन्होंने याहवेह, अपने परमेश्वर को भुलाकर, बाल तथा
अशेरा की सेवा-उपासना करना शुरू कर दिया.

8 याहवेह का क्रोध इस्राएल के विरुद्ध भड़क उठा. इस कारण
याहवेह ने उन्हें मेसोपोतामिया के राजा कूशन-रिशाथईम के
हाथों में बेच दिया. इस्राएल वंशज आठ साल कूशन-
रिशाथईम के दासत्व में रहे.

9 मगर जब इस्राएल वंशजों ने याहवेह की दोहाई दी, याहवेह
ने इस्राएल वंशजों के लिए एक छुड़ानेवाले का उदय किया,
कि वह इस्राएल वंशजों को छुड़ाए: कालेब के छोटे भाई
केनज़ के पुत्र ओथनीएल को.

10 याहवेह का आत्मा उस पर उतरा, और उसने इस्राएल पर
शासन किया. जब वह युद्ध के लिए आगे बढ़ा, याहवेह ने
मेसोपोतामिया के राजा कुशान-रिशाथईम को उसके अधीन
कर दिया. फलस्वरूप, कूशन-रिशाथईम ओथनीएल के
अधीन हो गया.

11 इसके बाद देश में चालीस सालों तक शांति बनी रही, फिर
केनज़ के पुत्र ओथनीएल की मृत्यु हो गई.

12 एक बार फिर इस्राएल के वंशजों ने वह किया, जो याहवेह
की नज़र में गलत था. इस कारण याहवेह ने इस्राएल के विरुद्ध
मोआब के राजा एगलोन की शक्ति बढ़ा दी, क्योंकि उन्होंने
वह किया था, जो याहवेह की नज़र में गलत था.

13 एगलोन ने अम्मोन के वंशजों तथा अमालेक के वंशजों से
मित्रता कर ली. उसने हमला कर इस्राएल को हरा दिया तथा
खजूर वृक्षों के नगर को अपने वश में कर लिया.

*Judges 4:1*

14 इस्राएल के वंशज अठारह वर्ष मोआब के राजा एगलोन के
दासत्व में रहे.

15 तब इस्राएल के वंशजों ने याहवेह की दोहाई दी, और
याहवेह ने उनके लिए एक छुड़ानेवाले का उदय किया,
बिन्यामिन के वंशज गेरा का पुत्र एहूद का. वह बांए हाथ से
काम करता था. इस्राएलियों ने उसी के द्वारा मोआब के राजा
एगलोन को कर की राशि भेजी थी.

16 एहूद ने अपने लिए दोधारी तलवार बना रखी थी, जिसकी
लंबाई लगभग आधा मीटर थी. इसे उसने अपने बाहरी वस्त्र
के भीतर दाईं जांघ पर बांध रखा था.

17 उसने मोआब के राजा एगलोन को कर राशि भेंट की.
एगलोन बहुत ही मोटा व्यक्ति था.

18 जब एहूद उसे कर राशि भेंट कर चुका, उसने उन सभी
व्यक्तियों को भेज दिया, जो उसके साथ आए थे.

19 एहूद स्वयं गिलगाल की मूर्तियों के पास पहुंचने के बाद वहां
से लौट आया और राजा को कहा, "महाराज, मुझे आपको एक
गुप्त संदेश देना है." राजा ने आदेश दिया, "शांति!" तब सभी
सेवक कमरे से बाहर चले गए.

20 एहूद राजा के निकट गया. राजा इस समय छत पर बने
अपने ठण्ड़े कमरे में अकेला बैठा हुआ था. एहूद ने राजा से
कहा, "मुझे परमेश्वर की ओर से आपके लिए भेजा हुआ एक
संदेश देना है." सो राजा अपने आसन से उठ खड़ा हुआ.

21 एहूद ने अपने बाएं हाथ से दाईं जांघ पर बंधी हुई तलवार
निकाली और राजा के पेट में भोंक दी.

22 फ़लक के साथ मुठिया भी भीतर चली गई और चर्बी ने
फ़लक को ढक लिया. एहूद ने एगलोन के पेट से तलवार बाहर
नहीं निकाली. पेट में से मल बाहर निकल आया.

23 एहूद बाहर बरामदा में चला गया, उसने अपने पीछे छत के
कमरे के दरवाजे बंद कर दिए और ताला लगा दिया.

24 जब वह जा चुका, राजा के सेवक आए और उन्होंने देखा
कि दरवाजे पर ताला लगा हुआ है, उन्होंने सोचा, "महाराज
ठण्ड़े कमरे में आराम कर रहे होंगे."

25 वे लोग इतनी देर तक इंतजार करते-करते व्याकुल हो गए.
फिर भी जब छत के कमरे का दरवाजा न खुला, उन्होंने चाबी
लेकर दरवाजा खोला तो देखा कि उनका स्वामी भूमि पर मरा
पड़ा हुआ था.

26 यहां, जब वे इंतजार कर रहे थे, एहूद निकल भागा. वह
मूर्तियों के पास से निकलकर सईरा जा पहुंचा.

27 वहां उसने एफ्राईम के पहाड़ी प्रदेश में तुरही फूंका.
इस्राएल के वंशज पहाड़ी इलाके से उसका पीछा करते हुए
नीचे आए और वह उनका अगुआ बन गया.

28 उसने घोषणा की, "मेरे पीछे चले आओ, क्योंकि याहवेह ने
तुम्हारे शत्रु मोआबियों को तुम्हारे अधीन कर दिया है." सो वे
उसके साथ गए और जाकर यरदन के घाटों को, जो मोआब
के परे थे, अपने अधीन कर लिया और किसी को भी पार जाने
न दिया.

29 उस समय उन्होंने लगभग दस हज़ार मोआबियों को मार
डाला. ये सभी हष्ट-पुष्ट पुरुष थे. इनमें से एक भी बचकर
निकल न सका.

30 इस प्रकार उस दिन इस्राएल ने मोआब को अपने अधीन
कर लिया. इसके बाद देश में अस्सी साल तक शांति बनी रही.

31 एहूद के बाद अनात के पुत्र शमगर ने बैलों को हांकने की
छड़ी का प्रयोग कर छः सौ फिलिस्तीनियों को मार डाला और
इस प्रकार उसने भी इस्राएल को छुटकारा दिलाया.

## Judges 4:1

1 एहूद की मृत्यु के बाद एक बार फिर इस्राएल वंशजों ने वह
किया, जो याहवेह की नज़र में गलत था.

2 याहवेह ने उन्हें कनान के राजा याबीन के हाथों में बेच दिया.
वह हाज़ोर में शासन करता था. उसकी सेना का सेनापति
सीसरा था, जो हरोशेथ-हग्गोयिम में रहता था.

*Judges 4:1*

3 उसकी सेना में नौ सौ लोहे के रथ थे. उसने बीस साल तक
इस्राएल वंशजों को बहुत ही निर्दयता से सताया. तब इस्राएल
वंशजों ने याहवेह से सहायता की गुहार लगाई.

4 इस समय लप्पीदोथ की पत्नी दबोरा, जो भविष्यद्वक्तिन थी,
इस्राएल पर शासन कर रही थी.

5 वह एफ्राईम के पहाड़ी प्रदेश में रामा और बेथेल के बीच
एक खजूर के पेड़ के नीचे बैठा करती थी. इस्राएल वंशज
न्याय पाने के लिए उसी के पास आया करते थे.

6 उसने नफताली के केदेश से अबीनोअम के पुत्र बाराक को
बुलवाया और उससे कहा, "सुनो, याहवेह, इस्राएल के
परमेश्वर का आदेश यह है: 'ताबोर पर्वत पर नफताली वंशजों
में से तथा ज़ेबुलून वंशजों में से दस हज़ार व्यक्तियों को इकट्ठा
करो.

7 मैं तुम्हारे सामने याबीन की सेना के सेनापति सीसरा को
उसके रथों और उसकी सेना समेत कीशोन नदी पर ले
आऊंगा और उसे तुम्हारे अधीन कर दूंगा.' "

8 बाराक ने उसे उत्तर दिया, "यदि आप मेरे साथ चलेंगी तो मैं
जाऊंगा, नहीं तो नहीं जाऊंगा."

9 दबोरा ने उसे उत्तर दिया, "मैं ज़रूर तुम्हारे साथ चलूंगी,
लेकिन याद रहे, तुम जिस अभियान पर जा रहे हो, उसका श्रेय
तुम्हें न मिलेगा, क्योंकि उस स्थिति में याहवेह सीसरा को एक
स्त्री के अधीन कर देंगे." इस प्रकार दबोरा ने बाराक के साथ
केदेश के लिए कूच किया.

10 बाराक ने केदेश के लिए ज़ेबुलून और नफताली के लोगों
को बुला लिया. दस हज़ार पुरुष सैनिक उसके साथ हो लिए.
दबोरा भी उनके साथ गई.

11 इस समय केनी हेबेर केनियों से अलग हो गया था. ये मोशेह
के ससुर होबाब के वंशज थे. हेबेर ने अपनी छावनी सानन्नीम
के बांज पेड़ के पास डाल रखी थी. यह स्थान केदेश के पास
है.

12 जब सीसरा को सूचना दी गई कि अबीनोअम का पुत्र
बाराक ताबोर पर्वत पर पहुंच गया है,

13 उसने हरोशेथ-हग्गोयिम से लेकर कीशोन नदी तक अपने
नौ सौ लोहे के रथों और सभी सैनिकों को इकट्ठा कर लिया.

14 दबोरा ने बाराक को आदेश दिया, "उठो! आज ही वह दिन
है, जिसमें याहवेह ने सीसरा को तुम्हारे अधीन कर दिया है.
देख लो, याहवेह तुम्हारे आगे जा चुके हैं?" तब बाराक दस
हज़ार लोगों को लेकर ताबोर पर्वत से नीचे उत्तर गया.

15 याहवेह ने बाराक की तलवार की धार से सीसरा, उसके
सभी रथ तथा उसकी पूरी सेना को हरा दिया. सीसरा अपने
रथ से उतर गया और पैदल ही भाग गया.

16 बाराक ने हरोशेथ-हग्गोयिम तक रथों और सेना का पीछा
किया. सीसरा की पूरी सेना तलवार का कौर हो गई एक भी
सैनिक न बच पाया.

17 सीसरा पैदल ही भागते हुए केनी हेबेर की पत्नी याएल की
छावनी में जा पहुंचा, क्योंकि हाज़ोर के राजा याबीन तथा केनी
हेबेर के परिवारों के बीच शांति की वाचा थी.

18 याएल सीसरा से भेंटकरने आई और उससे कहा, "मेरे
स्वामी, मेरे निकट आइए, मेरे निकट आइए. डरिए मत."
सीसरा उसकी छावनी के अंदर चला गया. याएल ने उसे एक
कंबल ओढ़ा दिया.

19 सीसरा ने उससे विनती की, "कृपा कर मुझे पीने के लिए
थोड़ा पानी दो. मैं प्यासा हूं." उसने उसे दूध का बर्तन खोलकर
उसे पीने दिया; दोबारा कंबल ओढ़ा दिया.

20 सीसरा ने याएल से कहा, "तंबू के दरवाज़े पर खड़ी रहना.
यदि कोई तुमसे पूछे, 'अंदर कोई है?' तुम कह देना, 'नहीं.' "

21 मगर हेबेर की पत्नी ने छावनी की एक खूंटी और एक
हथौड़ी उठाई, और चुपके से जाकर वह खूंटी उसकी कनपटी
में ठोक दी. खूंटी उसके सिर से पार निकलकर ज़मीन में धंस
गई और उसकी मृत्यु हो गई. वह बहुत ही थक कर गहरी नींद
में सोया हुआ था.

22 जब बाराक सीसरा का पीछा करता हुआ वहां आया, याएल
उससे भेंटकरने तंबू के बाहर निकल आई और उससे कहा,
“यहां आइए, मैं आपको वह आदमी दिखाऊंगी, जिसे आप
ढूंढ़ रहे हैं.” बाराक उसके साथ अंदर गया और देखा कि
सीसरा वहां मरा पड़ा हुआ था, और तंबू की खूंटी उसकी
कनपटी में धंसी हुई थी.

23 उस दिन परमेश्वर ने कनान के राजा याबीन को इस्राएलियों
के सामने हरा दिया.

24 इसके बाद इस्राएली कनान के राजा याबीन पर लगातार
सामर्थ्यी ही होते चले गए और अंत में उन्होंने कनान के राजा
याबीन को खत्म ही कर दिया.

## Judges 5:1

1 उस दिन दबोरा तथा अबीनोअम के पुत्र बाराक ने यह गीत
गाया:

2 “धन्य हैं याहवेह! जब इस्राएल में अगुओं ने अगुवाई की, जब
प्रजा अपनी इच्छा के अनुसार तैयार हो गई.

3 “सुन लो, राजाओं; ध्यान दो शासको! मेरा गीत याहवेह को
समर्पित है, मैं याहवेह, इस्राएल के परमेश्वर की स्तुति गाऊंगी.

4 “याहवेह, जब आप सेईर से बाहर निकले, जब आपने एदोम
क्षेत्र से चलना शुरू किया, पृथ्वी कांप उठी, आकाश टूट पड़ा,
यहां तक कि बादलों से बारिश शुरू हो गई.

5 याहवेह के सामने पहाड़ हिल गए. यहां तक कि सीनायी
पहाड़ भी, याहवेह, इस्राएल के परमेश्वर के सामने.

6 “अनात के पुत्र शमगर के दिनों में, याएल के दिनों में, सड़कें
सुनी पड़ीं थी, यात्रियों ने दूसरे मार्ग अपना लिए थे.

7 इस्राएल देश में अब ग्रामीण नहीं बचे थे, जब तक मैं, दबोरा
ने शासन न संभाला था, जब तक मैं, इस्राएल के लिए एक मां
के समान उभर न आई.

8 नए देवता चुने गए, दरवाजों के अंदर ही युद्ध छिड़ गया, इस
युद्ध में न ढाल थी, न बर्छी, जबकि इस्राएल में चालीस हज़ार
सैनिक थे.

9 मेरा हृदय इस्राएल के सेनापतियों के पक्ष में है, जिन्होंने
अपने आपको अपनी इच्छा से युद्ध सेवा भेंट दी. धन्य हैं
याहवेह!

10 “तुम, जो सफ़ेद गधों पर यात्रा करते हो, तुम, जो आलीशान
गलीचों पर बैठा करते हो, और तुम, जो पैदल हो, गाओ!

11 पनघटों के बीच में पानी भरनेवाली स्त्रियों की जो आवाज
आ रही है उस पर ध्यान दो, वहां वे याहवेह के नीतियुक्त कामों
का वर्णन करेंगे, इस्राएल में अपने ग्रामीणों के लिए किए गए
महान कार्य. “तब याहवेह के लोग फाटकों की ओर चले गए.

12 ‘जागो, दबोरा, जागो! जागो-जागो, तुम्हारे मुख से गीत फूट
पड़ें! उठो बाराक! तुम बंदियों को आगे ले जाओ, अबीनोअम
के पुत्र.’

13 “तब वे, जो जीवित रह गए थे, अधिकारियों से मिलने आए.
याहवेह के लोग योद्धा के समान मेरे पास आए.

14 एफ्राईम से वे लोग नीचे उतर आए, जिनका मूल अमालेक
में है. ओ बिन्यामिन, तुम्हारे लोगों के साथ तुम्हारा अनुगमन
करते हुए, माखीर से सेनापति नीचे उतर आए. ज़ेबुलून से वे
आए, जो अपने झंडे लिए हुए थे.

15 यिस्साकार के शासक दबोरा के साथ थे. इस्साखार बाराक
के प्रति ईमानदार बना रहा. रियूबेन की टुकड़ियों के बीच में
हृदय के पक्के इरादे पाए गए. घाटी में वे उसके पीछे लपक
पड़े.

16 चरवाहों द्वारा भेड़ों के लिए किए जा रहे बांसुरी के गीत को
सुनते हुए तुम भेड़शालाओं में ही क्यों ठहरे रहे? रियूबेन की
टुकड़ियों के बीच में बारीकी से हृदय की थाह ली गई.

17 गिलआद यरदन के पार ही ठहरा रहा, क्या कारण था कि
दान जहाजों में ही ठहरा रहा? आशेर सागर के किनारे पर
बैठा देखा गया, और वह समुद्र के किनारे ही ठहरा रहा.

*Judges 6:1*

18 ज़ेबुलून वंशजों ने अपने प्राणों की चिंता न की; नफताली
मैदान के टीलों पर ठहरा रहा.

19 “राजा आए, उन्होंने युद्ध किया, तब तानख में मगिद्दो
जलाशय के पास कनान के राजाओं ने युद्ध किया, पर वे
इस्राएल के लोगों की कोई चांदी न ले जा सके!

20 तारों ने आकाश से युद्ध किया. अपनी-अपनी कक्षाओं से
उन्होंने सीसरा से युद्ध किया.

21 कीशोन की धारा उन्हें बहा ले गई, पुराने समय से चली आ
रही नदी की धारा—कीशोन की धारा. मेरे प्राण, दृढ़ निश्चय
कर आगे बढ़ो.

22 तब घोड़े की टाप सुने गए, उनके शूरवीर घोड़ों के टाप.

23 याहवेह के दूत ने आदेश दिया, ‘मेरोज को शाप दो. इसके
निवासियों को शाप दो. क्योंकि वे याहवेह की सहायता के लिए
नहीं आए; योद्धाओं के विरुद्ध याहवेह की सहायता के लिए.’

24 “स्त्रियों में परम धन्य है याएल. केनी हेबेर की पत्नी; शिविर
में रहनेवाली स्त्रियों में सबसे ज्यादा स्तुति के योग्य.

25 सीसरा ने विनती तो जल की थी, किंतु उसने उसे दूध दे
दिया; एक राजसी आलीशान कटोरे में उसने उसको दही दे
दिया.

26 उसने एक हाथ में तंबू की खूंटी उठाई और दाएं हाथ में
मज़दूर का हथौड़ा, उसने सीसरा का सिर कुचल डाला. उसने
उसकी कनपटी को तोड़ते हुए छेद डाला.

27 वह उसके पैरों के बीच झुका, वह गिरा और धराशायी हो
गया. वह उसके पैरों के बीच झुका, वह गिरा, जहां वह झुक
गया था, वह वहीं मरा पड़ा रहा.

28 “सीसरा की मां खिड़की में से झांकती हुई रो रही थी.
‘सीसरा के रथ के लौटने में देरी क्यों हो रही है? घोड़े की टापों
में यह देरी क्यों? रथ लौट क्यों नहीं रहे?’

29 उसकी चतुर राजपुत्रियां उसे इसका उत्तर देंगी, वह मन ही
मन अपना प्रश्न दोहराती रही:

30 ‘क्या, उन्हें अब तक लूट का सामान नहीं मिला? क्या, वे
सामान का बंटवारा नहीं कर रहे? हर एक योद्धा के लिए एक
या दो कन्याएं. सीसरा के लिए रंगे हुए वस्त्र, रंगे हुए तथा
कसीदा किए हुए वस्त्र; उनके गले पर, जो लूट में से, दोहरी
कशीदाकारी किए हुए वस्त्र?’

31 “याहवेह, आपके सभी शत्रु इसी प्रकार नष्ट हों! मगर
आपके भक्त जो आपसे प्रेम रखते हैं, वह प्रताप के साथ उदय
होते हुए सूर्य के समान हों.” इसके बाद देश में चालीस साल
तक शांति बनी रही.

## Judges 6:1

1 इस्राएल के वंशजों ने वह किया, जो याहवेह की नज़रों में
गलत था; इस कारण याहवेह ने उन्हें सात सालों के लिए
मिदियानियों के वश में कर दिया.

2 मिदियान की ताकत इस्राएल पर प्रबल होती गई. इस कारण
से मिदियान के डर से इस्राएल के वंशजों ने पहाड़ों में मांदें,
गुफाएं और गढ़ को अपने निवास बना लिए थे.

3 जब इस्राएली बीज बोते थे, मिदियानी अमालेकियों तथा पूर्वी
देश के क्षेत्रों के लोगों के साथ मिलकर इस्राएलियों पर हमला
कर करते थे.

4 उनके विरुद्ध शिविर डालकर अज्जाह तक उनकी उपज
को नष्ट कर देते थे. इस कारण इस्राएल में न तो भोजन सामग्री
बची रह जाती थी, न भेड़ें, न बैल, न गधे.

5 जब वे अपने पशुओं और छावनियों के साथ आते, वे टिड्डी
दल के समान लगते थे. उनके ऊंट अनगिनत थे. देश में प्रवेश
करते हुए उनका लक्ष्य सिर्फ विनाश ही हुआ करता था.

6 मिदियान के द्वारा इस्राएल की अर्थ व्यवस्था बहुत ही
कमजोर हो चुकी थी. इस कारण सहायता के लिए इस्राएलियों
ने याहवेह की दोहाई दी.

*Judges 6:1*

7 जब मिदियानियों के कारण इस्राएलियों ने याहवेह की
दोहाई दी,

8 याहवेह ने इस्राएल के वंशजों के लिए एक भविष्यद्वक्ता
भेजा, जिसने उनसे कहा, “यह याहवेह, इस्राएल के परमेश्वर
का संदेश है, मैं ही था जिसने मिस्र से, दासत्व के घर से, तुम्हें
निकाला.

9 मैंने मिस्रियों के अधिकार से, तुम्हारे सभी अत्याचारियों के
हाथों से, तुम्हें छुड़ा लिया, उन्हें तुम्हारे सामने से दूर हटाकर
तुम्हें उनका देश दे दिया.

10 मैंने तुम्हें यह आश्वासन दिया, ‘मैं याहवेह, तुम्हारा परमेश्वर
हूं. जिन अमोरियों के देश में तुम रह रहे हो, ज़रूरी नहीं कि
तुम उनके देवताओं से डर जाओ.’ मगर तुमने मेरे आदेश का
पालन नहीं किया.”

11 याहवेह का दूत उस बांज वृक्ष के नीचे आकर बैठ गया, जो
ओफ़राह में था. यह वृक्ष अबीएज़री योआश की संपत्ति थी.
गिदोन इस समय मिदियानियों से छिपाने के लिये अंगूर पेरने
के कोल्हू में गेहूं को भूसी से अलग कर रहा था.

12 याहवेह के दूत ने गिदोन पर प्रकट होकर उसका
अभिवादन किया, “वीर योद्धा, याहवेह तुम्हारे पक्ष में है.”

13 गिदोन ने उससे कहा, “माफ कीजिए मेरे स्वामी, यदि
याहवेह हमारे पक्ष में हैं, तो हमारे साथ यह सब क्यों हो रहा
है? कहां गए वे सभी अद्भुत काम जिनका वर्णन हमारे पूर्वजों
ने हमसे किया था? वे कहते थे, ‘क्या वह याहवेह ही न थे,
जिन्होंने हमें मिस्र देश से निकाल लिया है?’ किंतु अब तो
याहवेह ने हमें छोड़ दिया है, और हमें मिदियानियों के हाथों में
सौंप दिया है.”

14 तब याहवेह ने गिदोन से कहा, “अपनी इसी शक्ति में जाकर
मिदियानियों के अधिकार से इस्राएलियों को छुड़ाओ. तुम्हारे
लिए यह मेरा आदेश है, मैं हूं तुम्हें भेजने वाला.”

15 गिदोन ने याहवेह को उत्तर दिया, “माफ कीजिए मेरे प्रभु,
मैं इस्राएल को कैसे छुड़ा सकता हूं? आप ही देखिए, मेरा
परिवार मनश्शेह गोत्र में सबसे छोटा माना जाता है, तथा
इसके अलावा अपने पिता के परिवार में मैं सबसे छोटा हूं.”

16 जवाब में याहवेह ने कहा, “मगर मैं जो तुम्हारे साथ रहूंगा.
तुम सारी मिदियानी सेना को ऐसे हरा दोगे जैसे सिर्फ एक
व्यक्ति को.”

17 गिदोन ने याहवेह से कहा, “यदि आप मुझसे संतुष्ट हुए हैं,
तो मुझे एक चिन्ह दिखाकर साबित कर दीजिए, कि आप वही
हैं, जो आप कह रहे हैं कि आप हैं.

18 कृपया मेरे लौटने तक आप यहीं ठहरिए, कि मैं आपको
अपनी भेंट चढ़ा सकूं.” उसने कहा, “तुम्हारे लौटने तक मैं यहीं
ठहरूंगा.”

19 गिदोन गया, और उसने एक एफाह आटे की अखमीरी
रोटियां और एक मेमने के मांस का व्यंजन तैयार कर एक
टोकरी में रखा और एक बर्तन में रसा लेकर बांज वृक्ष के नीचे
गया, और वहां इन्हें स्वर्गदूत के सामने परोस दिया.

20 परमेश्वर के दूत ने उससे कहा, “अखमीरी रोटी तथा मांस
के व्यंजन को चट्टान पर सजा दो और रसा इनके ऊपर डाल
दो.” गिदोन ने ऐसा ही किया.

21 तब स्वर्गदूत ने अपने हाथ की छड़ी को आगे बढ़ाकर
अखमीरी रोटी व मांस के व्यंजन को छुआ. चट्टान से आग
निकली और अखमीरी रोटी व मांस को चट कर गई. इसके
बाद याहवेह का दूत उसकी नज़रों से गायब हो गया.

22 जब गिदोन को यह अहसास हुआ कि वह याहवेह का दूत
ही था, वह कह उठा, “हाय, याहवेह परमेश्वर, मैंने तो याहवेह
के दूत को आमने सामने देख लिया है.”

23 याहवेह ने उसे आश्वासन दिया, “तुम्हारी मृत्यु नहीं होगी.
भयभीत न होओ, तुम्हारा भला हो.”

24 इस कारण गिदोन ने वहां याहवेह के लिए एक वेदी बनाई
तथा उसे नाम दिया, याहवेह शालोम हैं. आज तक यह वेदी
अबीएज़रियों के ओफ़राह में बनी हुई है.

25 उसी रात याहवेह ने गिदोन से कहा, “अपने पिता का दूसरा
बैल जो सात वर्ष का है, उसे लेकर जाओ. अपने पिता के बाल
की वेदी गिरा दो तथा उसने निकट खड़े अशेरा को गिरा दो.

*Judges 7:1*

26 फिर याहवेह, अपने परमेश्वर के लिए इसी गढ़ के ऊपर
अच्छी सी वेदी को बनाओ. इसके बाद उस बैल की होमबलि
चढ़ाओ और उसके लिए अशेरा खंभे की लकड़ी का इस्तेमाल
करना, जिसे तुम पहले ही काट चुके होगे.”

27 सो गिदोन अपने साथ दस सेवकों को लेकर वहां गया और
वही किया, जैसा याहवेह ने आदेश दिया था. अपने पिता के
परिवार तथा नगरवासियों के भय से उसने यह रात के समय
किया.

28 बड़े तड़के, जब नगरवासियों ने देखा कि बाल की वेदी गिर
पड़ी थी, उसके निकट स्थापित की हुई अशेरा काट डाली गई
थी, तथा निर्माण की हुई वेदी पर वह बैल को चढ़ाया गया था.

29 वे आपस में सोचने विचारने लगे, “किसने किया है यह?”
उनकी खोज तथा पूछताछ के फलस्वरूप, उन्हें सूचित किया
गया, “यह योआश के पुत्र गिदोन ने किया है.”

30 फिर नगरवासियों ने योआश को आदेश दिया, “बाहर
लाओ अपने पुत्र को, कि उसे मृत्यु दंड दिया जाए, क्योंकि
उसने बाल की वेदी गिरा दी, तथा उसके पास की अशेरा को
काट डाला है.”

31 किंतु योआश ने अपने उन सभी विरोधियों से कहा,
“आपका उद्देश्य बाल के लिए विरोध करना है, या उसे सुरक्षा
प्रदान करना? जो कोई बाल का विरोध करेगा, सुबह तक
उसका वध कर दिया जाएगा, यदि बाल वास्तव में देवता है,
वह स्वयं अपने बारे में बोलेगा, क्योंकि किसी ने उसकी वेदी
गिरा दी है.”

32 सो उस दिन योआश ने गिदोन को यरूबाल नाम दे दिया,
जिसका मतलब है, “बाल ही उसका विरोध करे,” क्योंकि
गिदोन ने बाल की वेदी गिरा दी थी.

33 कुछ समय बाद सभी मिदियानी, अमालेक तथा पूर्वी देशों
के लोग एकजुट हो गए यरदन पार कर उन्होंने येज़्रील घाटी
में शिविर खड़े कर दिए.

34 याहवेह का आत्मा गिदोन पर उतरा; गिदोन ने तुरही फूंकी
और उसने अपने पीछे चलने के लिए अबीएज़ियों को बुलाया.

35 उसने मनश्शेह गोत्र के सारे प्रदेश में दूत भेजे, और पीछे
चलने के लिए उनको भी बुलाया. उसने आशेर, ज़ेबुलून तथा
नफताली के गोत्रों में भी दूत भेज दिए, वे उससे भेंटकरने आ
गए.

36 गिदोन ने परमेश्वर से विनती की, “यदि आप मेरे द्वारा
इस्राएल को छुड़वा रहे हैं, जैसा कि आपने ही कहा है,

37 देखिए, मैं खलिहान में ऊन की कतरन छोड़ दूंगा; यदि
ओस ऊन की कतरन पर ही पाई जाएगी, और सारी भूमि
सूखी; तो मैं इससे समझ लूंगा कि आप अपने वचन के
अनुसार मेरे द्वारा इस्राएल को छुड़ाएंगे.”

38 ऐसा ही पाया गया! जब गिदोन ने अगले दिन उसे निचोड़ा,
उसने इसमें से एक कटोरे भर जल इकट्ठा कर लिया.

39 इसके बाद गिदोन ने परमेश्वर से विनती की, “कृपया मुझ
पर क्रोध न करें; मैं एक बार और विनती करना चाहूंगा. इस
बार ऊन की कतरन सूखी बनी रहे, तथा सारी भूमि पर ओस
पाई जाए.”

40 परमेश्वर ने उस रात वैसा ही किया; केवल ऊन की कतरन
सूखी रही मगर सारी भूमि ओस से भीगी हुई थी.

## Judges 7:1

1 तब यरूबाल, अर्थात् गिदोन, तथा उसके साथ के सारे योद्धा
तड़के उठे और उन्होंने हरोद के सोते के पास पड़ाव डाल
दिया; मिदियानी उनके उत्तर में घाटी की मोरेह पहाड़ी पर
पड़ाव डाले हुए थे.

2 याहवेह ने गिदोन से कहा, “मिदियानियों को तुम्हारे वश में
कर देने के उद्देश्य से तुम्हारे साथ के इन लोगों की संख्या
बहुत अधिक है. ऐसा न हो इस्राएल अहंकार में यह डींग मारने
लगे, ‘अपनी ही शक्ति से हमने छुटकारा प्राप्त किया है!’

3 इस कारण अब मेरे पास आओ, लोगों को घोषणा करके यह
सुना दो, ‘जो कोई डरा हुआ है, और डर से कांप रहा है, वह
गिलआद पहाड़ से लौटकर चला जाए.’ ” इस घोषणा पर
बाईस हज़ार लोग लौटकर चले गए. बचे रह गए, दस हज़ार.

*Judges 7:1*

4 याहवेह ने गिदोन से कहा, “अब भी गिनती में ये लोग बहुत
ज्यादा हैं. उन्हें जल के पास ले आओ कि मैं उन्हें वहां तुम्हारे
लिए परख सकूं. मैं जिस किसी के विषय में कहूंगा, ‘यह
जाएगा तुम्हारे साथ,’ वही तुम्हारे साथ जाएगा; किंतु जिस
किसी के विषय में मैं यह कहूं ‘यह तुम्हारे साथ नहीं जाएगा,’
वह तुम्हारे साथ नहीं जाएगा.”

5 इस प्रकार गिदोन उस सबको जल के निकट ले आया.
याहवेह ने गिदोन को आदेश दिया, “तुम उन्हें, जो कुत्ते के
समान जीभ से जल पिएंगे, उनसे अलग कर लेना, जो घुटने
टेककर जल पिएंगे.”

6 उन व्यक्तियों की गिनती, जिन्होंने चुल्लू में जल लेकर जीभ
की सहायता से जल पिया था, तीन सौ हुई; मगर बचे हुए वे थे,
जिन्होंने घुटने टेककर जल पिया था.

7 याहवेह ने गिदोन से कहा, “मैं इन्हीं तीन सौ व्यक्तियों के
द्वारा तुम्हें छुटकारा दिलाऊंगा, जिन्होंने चुल्लू में जल लेकर
जीभ की सहायता से पिया था. मैं मिदियानियों को तुम्हारे
अधीन कर दूंगा. इसलिये अब इन बचे हुओं को लौट जाने दो.”

8 इन लोगों ने अपने भोजन सामग्री और अपने नरसिंगे उठा
लिए. बाकियों को गिदोन ने विदा कर दिया, और इस्राएली
अपनी-अपनी घर को लौट गए, मगर इन तीन सौ को उसने
अपने साथ रखा. मिदियानियों का पड़ाव नीचे घाटी में था.

9 उसी रात याहवेह ने गिदोन को आदेश दिया, “उठो, जाकर
पड़ाव पर हमला कर दो, क्योंकि मैंने उसे तुम्हारे अधीन कर
दिया है.

10 हां, यदि तुम्हें वहां जाने में डर लग रहा हो, तो अपने सेवक
पुराह को लेकर वहां पड़ाव को जाओ.

11 वहां जाकर सुनो कि वे क्या-क्या बातें कर रहे हैं. इससे तुम्हें
हौसला मिलेगा कि तुम पड़ाव पर हमला कर सको.” सो
गिदोन अपने सेवक पुराह को लेकर सेना के पड़ाव की सीमा
चौकी पर जा पहुंचा.

12 इस समय मिदियानी, अमालेक तथा पूर्वी देशों से आए हुए
सैनिक घाटी में अपनी-अपनी छावनियों में लेटे हुए थे. वे टिड्डी
दल के समान अनगिनत थे. उनके ऊंट भी अनगिनत थे, जैसे
सागर किनारे की रेत.

13 जब गिदोन सीमा चौकी पर पहुंचा, एक सैनिक अपने मित्र
से अपने स्वप्न के बारे में बता रहा था; वह कह रहा था, “सुनो,
मैंने एक स्वप्न देखा है. जौ की एक रोटी लुढ़कती हुई आई और
मिदियानी पड़ाव में प्रवेश कर गई, एक तंबू तक पहुंचकर
उसने उस पर ऐसा हमला किया, कि वह तंबू भूमि पर बिछ
गया.”

14 उसके मित्र ने उत्तर में कहा, “इस्राएली योआश के पुत्र
गिदोन की तलवार के अलावा यह और कोई नहीं हो सकता.
परमेश्वर ने मिदियान तथा उसकी पूरी छावनी को उसके वश
में कर दिया है.”

15 जब गिदोन ने इस स्वप्न तथा इसके फल के बारे में सुना, वह
परमेश्वर की स्तुति में वहीं दंडवत हो गया. वह इस्राएली
छावनी को लौट गया और वहां यह घोषणा कर दी, “उठो-उठो
याहवेह ने मिदियानी पड़ाव को तुम्हारे वश में कर दिया है.”

16 तब गिदोन ने उन तीन सौ को तीन दलों में बांटकर उन
सभी के हाथों में नरसिंगे और खाली मटकियां दे दीं, जिनमें
मशालें रखी हुई थी.

17 उसने उन्हें आदेश दिया, “मेरी ओर देखते रहना तथा वैसा
ही करते जाना जैसा जैसा मैं करूंगा, और सुनो, जब मैं उनकी
छावनी के पास पहुंचूंगा, तो जो मैं करूंगा, वही तुम भी करना.

18 जब मैं और मेरे साथी नरसिंगा फूंकें, तब तुम भी पूरी
छावनी के आस-पास नरसिंगा फूंकते हुए नारा लगाना,
‘याहवेह के लिए और गिदोन के लिए!’ ”

19 इस कारण आधी रात को, जब उन्होंने पहरेदार चुने, गिदोन
और उसके साथ के सौ व्यक्ति छावनी के पास पहुंच गए.
उन्होंने नरसिंगे फूंके और अपने हाथों की मटकियों को फोड़
डाला.

20 जब तीनों दलों ने नरसिंगे फूंकते हुए अपनी-अपनी
मटकियां फोड़ीं, उन्होंने मशालें अपने बाएं हाथ में तथा नाद
करने के लिए नरसिंगे दाएं हाथ में पकड़े थे. उन्होंने नारा
लगाया, “तलवार याहवेह के लिए और गिदोन के लिए.”

21 हर एक व्यक्ति अपने-अपने स्थान पर पड़ाव के आस-पास
घेरा बनाए हुए खड़ा था. पड़ाव के सभी लोग भागने लगे. वे
सब भागते हुए चिल्लाते जा रहे थे.

22 जब उन तीन सौ ने नरसिंगे फूंके, याहवेह ने मिदियानियों
के हर एक सैनिक की तलवार उसके साथी पर चलवा दी;
ऐसा सारी सेना में हो गया. सेना ज़ेरेराह के बेथ-शित्ताह तक
भागती चली गई; और आगे तब्बाथ के निकट आबेल-
मेहोलाह की सीमा तक.

23 नफताली, आशेर तथा मनश्शेह के गोत्रों से इस्राएलियों को
बुलाया गया और उन्होंने भी मिदियानियों का पीछा किया.

24 गिदोन ने एफ्राईम के सारे पहाड़ी इलाके में यह संदेश
लेकर अपने दूत भेज दिए: "आकर मिदियान पर आक्रमण
करके उनसे बेथ-बाराह तथा यरदन तक के जलाशय छीन
लो." इसलिए एफ्राईम से सभी पुरुष आ गए और उन्होंने बेथ-
बाराह तथा यरदन तक सारे जलाशयों पर अधिकार कर
लिया.

25 उन्होंने मिदियान के दो हाकिमों ओरेब तथा ज़ेब, को पकड़
लिया. जब वे मिदियानियों का पीछा कर रहे थे, ओरेब का वध
ओरेब की चट्टान पर तथा ज़ेब का वध ज़ेब के दाख के कुंड
पर कर दिया. उन्होंने यरदन पार से ओरेब तथा ज़ेब के सिर
लाकर गिदोन के सामने रख दिए.

## Judges 8:1

1 एफ्राईमवासियों ने गिदोन से कहा, "आपने हमारे साथ ऐसा
व्यवहार क्यों किया?" आपने मिदियानियों से युद्ध के लिए
अपने साथ चलने के लिए हमें आमंत्रित ही नहीं किया! वे गुस्से
में गिदोन से विवाद करते रहे.

2 किंतु गिदोन ने उन्हें उत्तर दिया, "आप लोगों ने जो किया है,
उसकी तुलना में मेरा किया हुआ कुछ भी नहीं है. क्या यह सच
नहीं कि भूमि पर से बीने गए एफ्राईम के अंगूर अबीएज़ेर की
लता से तोड़े गए अंगूरों से गुणों में कहीं ज्यादा अच्छे होते हैं?

3 परमेश्वर ने मिदियान के शासक ओरेब तथा ज़ेब को तुम्हें
सौंप दिया हैं. आप लोगों की तुलना में मैंने किया ही क्या है?"
इस पर गिदोन के विरुद्ध उनका क्रोध शांत हो गया.

4 तब गिदोन तथा उसके साथ के तीन सौ व्यक्ति यरदन तट
पर पहुंचे और उन्होंने यरदन नदी पार की. वे पीछा करते हुए
बहुत ही थक चुके थे.

5 सुक्कोथवासियों से गिदोन ने विनती की, "मेरे साथ आ रहे
इन व्यक्तियों को कृपा कर रोटियां दे दीजिए, वे बहुत ही थक
चुके हैं, क्योंकि मैं मिदियानियों के राजाओं, सेबा तथा
ज़लमुन्ना का अभी भी पीछा कर रहा हूं."

6 सुक्कोथ के शासकों ने उत्तर में कहा, "क्या ज़ेबह तथा
ज़लमुन्ना को तुम वश में कर चुके हो, तो हम तुम्हारी सेना को
रोटी दें?"

7 ठीक है, "गिदोन ने उनसे कहा, जब याहवेह ज़ेबह तथा
ज़लमुन्ना को मेरे वश कर देंगे, तब मैं तुम्हारे शरीरों को जंगली
कंटीली झाड़ियों तथा कांटों में रौंद दूंगा."

8 वहां से वह पनीएल पहुंचा और उनसे भी यही विनती की.
पनीएल निवासियों का भी ठीक वही उत्तर था, जो
सुक्कोथवासियों का.

9 इस कारण गिदोन ने पनीएल निवासियों से कहा, "जब मैं
यहां सुरक्षित लौटूंगा, मैं इस खंभे को गिरा दूंगा."

10 ज़ेबह तथा ज़लमुन्ना अपनी सेनाओं के साथ कारकोर में थे.
ये लगभग पन्द्रह हज़ार सैनिक थे. ये सब वे थे, जो पूर्वी देशों
के वंशजों की पूरी सेना में से बच गए थे. युद्ध में मारे गये
तलवारधारियों की गिनती एक लाख बीस हज़ार हो गई थी.

11 गिदोन ने उनका मार्ग लिया, जो नोबाह तथा योगबेहाह के
पहले छावनियों में रहते थे, और उन पर उस समय हमला कर
दिया, जिस समय की उन्होंने उम्मीद ही न की थी.

12 जब ज़ेबह तथा ज़लमुन्ना भागे, गिदोन ने उनका पीछा
किया, और मिदियान के उन दो राजाओं—ज़ेबह तथा
ज़लमुन्ना को—जा पकड़ा, इससे सारी सेना तितर-बितर हुई.

13 योआश का पुत्र गिदोन युद्ध के बाद हेरेस की चढ़ाई से होता
हुआ लौटा,

14 उसने सुक्कोथ के एक युवक को पकड़ा और उससे
पूछताछ की. उस युवक ने उसे सुक्कोथ के शासकों तथा
पुरनियों, कुल सतहत्तर व्यक्तियों के नाम लिख दिए.

15 फिर उधर पहुंचकर सुक्कोथवासियों से गिदोन ने कहा,
“इन्हें देखो! ये हैं ज़ेबह और ज़लमुन्ना, जिनके विषय में तुमने
मेरा मज़ाक उड़ाया था, ‘क्या ज़ेबह और ज़लमुन्ना तुम्हारे
अधिकार में आ चुके हैं?’ ”

16 गिदोन ने नगर के पुरनियों को पकड़ा और निर्जन प्रदेश की
कंटीली झाड़ियां लेकर सुक्कोथ के इन व्यक्तियों को उनके
द्वारा किए गए गलत व्यवहार की अच्छी सजा दे डाली.

17 पनीएल के खंभे को उसने गिरा दिया, और नगरवासियों की
हत्या कर डाली.

18 तब उसने ज़ेबह तथा ज़लमुन्ना से पूछा, “तुमने जिन
व्यक्तियों की हत्या ताबोर में की थी, वे किस प्रकार के व्यक्ति
थे?” उन्होंने उत्तर दिया, “आपके ही समान हर एक का रूप
राजकुमार के समान था.”

19 गिदोन ने उनसे कहा, “वे मेरे भाई थे; मेरी माता की संतान.
जीवित याहवेह की शपथ, यदि तुमने उन्हें जीवित छोड़ा होता,
मैं तुम्हारा वध न करता.”

20 गिदोन ने अपने बड़े बेटे, येथेर को आदेश दिया, “उठो, इन्हें
खत्म कर दो.” किंतु उस युवक ने तलवार ही न खींची, क्योंकि
वह कम उम्र का युवा था.

21 यह देख ज़ेबह तथा ज़लमुन्ना ने विनती की, “आप खुद ही
उठकर हम पर वार कीजिए. पुरुष जैसा होता है, वैसा ही होता
है उसका बल.” सो गिदोन ने ही उठकर ज़ेबह तथा ज़लमुन्ना
का वध किया तथा उनके ऊंटों की गर्दनों से चन्द्रहार गहने
उतार लिए.

22 इस्राएली प्रजा ने गिदोन से विनती की, “आप हम पर शासन
कीजिए, आप दोनों—आप और आपका पुत्र—क्योंकि आपने
हमें मिदियानियों से छुड़ाया है.”

23 मगर गिदोन ने उन्हें उत्तर दिया, “आप लोगों पर शासन न
तो मैं करूंगा और न ही मेरा पुत्र. आप पर शासन स्वयं याहवेह
करेंगे.”

24 फिर भी गिदोन ने उनसे कहा, “आप में से हर एक से मेरी
एक विनती है, अपनी लूट की सामग्री में से मुझे एक-एक बाली
दे दो.” (इशमाएली कानों में सोने की बालियां पहनते थे.)

25 इस्राएलियों ने उससे कहा, “ये हम आपको ज़रूर देंगे.”
इसके लिए उन्होंने एक कपड़ा बिछा दिया और हर एक
व्यक्ति ने लूट में से एक-एक बाली वहां डाल दी.

26 जब इन सोने की बालियों को तौला गया, तो इनका भार
बीस किलो था. यह लूट में मिले चन्द्रहारों, कुण्डलों, मिदियानी
राजाओं द्वारा पहने जानेवाले बैंगनी वस्त्रों तथा ऊंटों के
चन्द्रहारों के अलावा था.

27 इनसे गिदोन ने एक एफ़ोद को बनाकर अपने नगर
ओफ़राह में रख दिया. सारे इस्राएल ने इसकी उपासना करने
के द्वारा याहवेह के प्रति व्यभिचार, अर्थात् विश्वासघात, का
पाप किया. यह एफ़ोद गिदोन तथा उसके परिवार के लिए
फंदा साबित हुआ.

28 मिदियान इस्राएल के वंशजों के वश में हो चुका था. इसके
बाद उन्होंने सिर नहीं उठाया. गिदोन के जीवनकाल में
चालीस साल तक शांति बनी रही.

29 तब योआश का पुत्र यरूबाल जाकर अपने ही घर में रहने
लगा.

30 गिदोन के सत्तर पुत्र थे, क्योंकि उनको अनेक पत्नियां थीं.

31 शेकेम में उनकी उप-पत्नी से भी एक पुत्र था. उन्होंने उसका
नाम अबीमेलेक रखा था.

32 योआश के पुत्र गिदोन की मृत्यु पूरे बुढ़ापे में हुई. उसे
अबीएज़रियों के ओफ़राह नगर में उसके पिता योआश की
गुफा की कब्र में रखा गया.

33 जैसे ही गिदोन का निधन हुआ, इस्राएल वंशजों ने बाल की उपासना करने के द्वारा याहवेह के प्रति व्यभिचार अर्थात् विश्वासघात का पाप किया. उन्होंने बाल-बेरिथ को अपने देवता के रूप में मान लिया.

34 ऐसा करने के द्वारा उन्होंने याहवेह, अपने परमेश्वर को भुला दिया, जिन्होंने उन्हें उनके चारों ओर के शत्रुओं से छुटकारा दिलाया था.

35 यहां तक कि, उन्होंने तो यरूबाल अर्थात् गिदोन के परिवार के प्रति भी कृपा न दिखाई, जबकि गिदोन ने इस्राएल के प्रति अनेक उपकार किए थे.

## Judges 9:1

1 यरूबाल का पुत्र अबीमेलेक अपने मामाओं से भेंटकरने शेकेम गया. वहां उसने अपने नाना के सारे घराने को इकट्ठा कर उनसे कहा,

2 "शेकेम के सारे अगुओं के सामने आप मुझे बताइए, 'क्या बेहतर है, यरूबाल के सत्तर पुत्र आप पर शासन करें या सिर्फ एक व्यक्ति?' आप लोग यह न भूलें कि मैं आपकी ही हड्डी और आपका ही मांस हूं."

3 उसकी माता के भाइयों ने उसकी यह बात शेकेम के अगुओं के सामने दोहरा दी. वे अबीमेलेक का अनुसरण करने के लिए तैयार हो गए. उनका विचार था, "वह हमारा ही संबंधी है."

4 उन्होंने उसे बाल-बेरिथ के मंदिर में से चांदी के सत्तर सिक्के दे दीं, जिनसे अबीमेलेक ने नीच और लुच्चे लोगों को अपने पीछे होने के उद्देश्य से भाड़े पर ले लिया.

5 फिर वह ओफ़राह में अपने पिता के घर पर गया और वहां अपने भाइयों को—यरूबाल के सत्तर पुत्रों को—एक ही चट्टान पर ले जाकर मार दिया, किंतु यरूबाल का छोटा पुत्र योथाम बचा रह गया, क्योंकि वह छिप गया था.

6 सभी शेकेमवासी एवं सभी बेथ-मिल्लोवासी इकट्ठे हो गए तथा उन्होंने शेकेम में खंभे के बांज वृक्ष के पास अबीमेलेक का राजाभिषेक कर दिया.

7 जब योथाम को इसकी सूचना दी गई, वह गेरिज़िम पर्वत शिखर पर जा खड़ा हुआ. वहां से उसने ऊंची आवाज में कहा, "सुनो, शेकेम के शासको, कि परमेश्वर भी तुम्हारी सुनें.

8 वृक्षों ने अपने लिए राजा चुनने की योजना बनाई. उन्होंने जैतून वृक्ष से कहा, 'हम पर शासन करो!'

9 "जैतून वृक्ष ने उत्तर में कहा, 'क्या मैं अपना वह अमूल्य तेल बनाना रोक दूं; जिसके द्वारा देवता तथा मनुष्य सम्मानित किए जाते हैं; और अन्य वृक्षों के ऊपर जाकर लहराता रहूं?'

10 "वृक्षों ने अंजीर वृक्ष से विनती की, 'आइए, हम पर शासन कीजिए!'

11 "मगर अंजीर वृक्ष ने उन्हें उत्तर दिया, 'क्या मैं अपनी मिठास और अच्छे फल उगाना छोड़ दूं और अन्य पेड़ों के ऊपर जाकर लहराता रहूं?'

12 "तब वृक्षों ने अंगूर की बेल से विनती की, 'आइए, हम पर शासन कीजिए!'

13 "किंतु अंगूर की बेल ने उत्तर में कहा, 'क्या मैं अपना दाखमधु बनाना छोड़ दूं, जो देवताओं और मनुष्यों को आनंदित कर देती है और अन्य पेड़ों के ऊपर जाकर लहराती रहूं?'

14 "अंत में सभी वृक्षों ने झड़बेरी से कहा, 'आइए, हम पर शासन कीजिए!'

15 "झड़बेरी ने वृक्षों से उत्तर में कहा, 'यदि आप लोग सच में मेरा राजाभिषेक करना चाह रहे हैं, तो आकर मेरी छाया में आसरा ले लीजिए; और अगर नहीं, तो झड़बेरी से आग निकलें और लबानोन के देवदार के पेड़ भस्म हो जाएं.'

16 "क्या, आप लोगों ने सच्चे मन से अबीमेलेक को राजा बनाया है, तथा ऐसा करने के द्वारा आप लोगों ने यरूबाल एवं उसके परिवार का भला किया है? क्या आपने वही किया है जिसके लिए वह योग्य था?

*Judges 9:1*

17 तुम्हारी भलाई के लिए मेरे पिता ने युद्ध किया, अपने प्राण
खतरे में डाले तथा आप लोगों को मिदियानियों की अधीनता
से छुड़ाया;

18 किंतु आज आप लोगों ने मेरे पिता के परिवार के विरुद्ध
विद्रोह कर दिया है, आपने उस एक ही चट्टान पर उनके सत्तर
पुत्रों का वध कर दिया और आपने उनकी सेविका के पुत्र
अबीमेलेक को शेकेम पर राजा बना दिया है, केवल इसलिये
कि वह आपका संबंधी है!

19 यदि आप लोगों ने आज यरूबाल तथा उनके परिवार के
साथ निष्कपट भाव से, सच्चाई में व्यवहार किया है, तो
अबीमेलेक में ही आपका आनंद हो तथा वह भी आप में ही
प्रसन्न रहे.

20 किंतु यदि नहीं, तो अबीमेलेक द्वारा आग भेजी जाए और
शेकेम तथा बेथ-मिल्लो के लोग इसमें भस्म हो जाएं, और
शेकेम तथा बेथ-मिल्लो के अगुओं की ओर से आग निकलकर
अबीमेलेक को भस्म कर दे."

21 यह कहकर योथाम वहां से भाग निकला. वहां से वह बएर
जा पहुंचा और अपने भाई अबीमेलेक के डर से वहीं रहने
लगा.

22 अबीमेलेक इस्राएल पर तीन साल तक शासन करता रहा.

23 तब परमेश्वर ने अबीमेलेक तथा शेकेमवासियों के बीच एक
बुरी आत्मा भेज दी. परिणामस्वरूप शेकेमवासियों ने
अबीमेलेक से विश्वासघात किया,

24 इसलिये कि यरूबाल के सत्तर पुत्रों से की गई हिंसा का
बदला लिया जा सके, और उनके खून का दोष उनके भाई
अबीमेलेक पर लगाया जा सके, जिसने उनकी हत्या की थी
तथा शेकेम के व्यक्तियों पर भी, जिन्होंने उसे अपने भाइयों
की हत्या के लिए उकसाया था.

25 उसके लिए शेकेम के लोगों ने पहाड़ों की चोटियों पर अपने
लोगों को घात में लगा दिए, जो वहां से निकलते हुए यात्रियों
को लूट करते थे. इसकी सूचना अबीमेलेक को दे दी गई.

26 एबेद का पुत्र गाअल अपने संबंधियों के साथ शेकेम गया.
वह शेकेमवासियों का विश्वासपात्र बन गया.

27 उन्होंने अपने अंगूर के बगीचों में जाकर अंगूर इकट्ठे
किए, अंगूर रौन्दे और अपने देवता के मंदिर में उत्सव मनाया.
वहां उन्होंने भोजन किया, पेय पान किया और फिर
अबीमेलेक को शाप भी दिया.

28 तब एबेद के पुत्र गाअल ने कहा, "कौन होता है अबीमेलेक,
और कौन होता है शेकेम, कि हम इनकी सेवा करें? क्या वह
यरूबाल का पुत्र नहीं, क्या ज़बुल उसका सहायक नहीं? हां,
शेकेम के पिता हामोर के साथियों की सेवा अवश्य करो, किंतु
हम भला अबीमेलेक की सेवा क्यों करें?

29 अच्छा होता कि ये लोग मेरे अधिकार में होते! तब मैं
अबीमेलेक को ही हटा देता. तब उसने अबीमेलेक से कहा,
'अपनी सेना को बढ़ाकर मुझसे युद्ध के लिए आ जाओ.' "

30 जब नगर अध्यक्ष ज़बुल ने एबेद के पुत्र गाअल का यह बातें
सुनी वह क्रोध से भड़क गया.

31 उसने तोरमाह नगर को अबीमेलेक के पास अपने दूत भेजे.
संदेश यह था: "देखिए, एबेद का पुत्र गाअल तथा उसके
संबंधी शेकेम आ गए हैं. यहां वे नगर को आपके विरुद्ध
उकसा रहे हैं.

32 इस कारण अब आप अपनी सेना को लेकर रात में मैदान
में घात लगा दीजिए.

33 सूरज उगते ही आप नगर पर टूट पड़िए. जब गाअल अपनी
सेना के साथ आप पर हमला करेगा, आप उसके साथ वही
कीजिए, जो आपको सही लगे."

34 अबीमेलेक तथा उसके साथ के सारे सैनिक रात में चार दल
बनाकर शेकेम के लिए घात लगाकर छिप गए.

35 एबेद का पुत्र गाअल जाकर नगर द्वार पर खड़ा हो गया.
अबीमेलेक तथा उसके सैनिक घात से बाहर आए.

*Judges 9:1*

36 यह देखकर गाअल ने ज़बुल से कहा, “देखो, लोग पहाड़
की चोटियों से नीचे आ रहे हैं!” किंतु ज़बुल ने उसे उत्तर दिया,
“आपको तो पर्वतों की छाया ही सेना जैसी दिखाई दे रही है.”

37 गाअल ने दोबारा बताया, “देश के बीचों-बीच से लोग नीचे
आ रहे हैं, तथा शकुन शास्त्रियों का एक दल बांज वृक्ष के मार्ग
से आ रहा है.”

38 इसे सुन ज़बुल ने उससे कहा, “क्या हुआ आपकी उन डींगों
का, जब आप कह रहे थे, ‘कौन है अबीमेलेक, कि हम उसकी
सेवा करें?’ क्या ये वे ही लोग नहीं जिनसे आप घृणा करते रहे?
अब जाइए और कीजिए उनसे युद्ध!”

39 गाअल गया और शेकेम के पुरुषों की अगुवाई करके
अबीमेलेक से युद्ध किया.

40 अबीमेलेक ने गाअल को खदेड़ दिया, और गाअल तथा
सैनिक भागने लगे. नगर द्वार के सामने अनेक सैनिक जो भाग
रहे थे, वे घायल होकर मर गये.

41 अबीमेलेक अरूमाह में ही ठहरा रहा, किंतु ज़बुल ने
गाअल तथा उसके संबंधियों को भगा दिया कि वे शेकेम में न
रह सकें.

42 दूसरे दिन शेकेम के नागरिक मैदान में निकल आए. इसकी
सूचना अबीमेलेक को दे दी गई.

43 तब उसने अपनी सेना को तीन भागों में बांट दिया और वे
घात लगाकर बैठ गए. जब उसने देखा कि लोग नगर से बाहर
आ रहे हैं, उसने उन पर आक्रमण कर उनको मार दिया.

44 फिर अबीमेलेक तथा उसके सैनिक दौड़कर नगर फाटक
पर जा पहुंचे. दूसरे दो दल दौड़-दौड़ कर उनको मारते चले
गए, जो नगर से बाहर आ गए थे.

45 अबीमेलेक दिन भर शेकेम से युद्ध करता रहा. उसने
शेकेम पर अधिकार कर लिया, और सभी नगरवासियों को
मार दिया. उसने नगर को पूरी तरह से गिराकर नगर क्षेत्र में
नमक बिखेर दिया.

46 जब शेकेम के मीनार पर रहनेवाले सभी अधिकारियों ने यह
सब सुना, वे एल-बरिथ मंदिर के भीतरी कमरे में इकट्ठे हो
गए.

47 अतः अबीमेलेक अपनी सेना के साथ ज़लमोन पर्वत पर
चला गया.

48 वहां अबीमेलेक ने कुल्हाड़ी लेकर वृक्ष की एक शाखा
काटी, उसे अपने कंधे पर उठा लिया और अपने साथ के
सैनिकों को आदेश दिया, “जैसा तुमने मुझे करते देखा है, तुम
भी वैसा ही करो.”

49 सभी ने अपने लिए एक-एक शाखा काटी, और अबीमेलेक
के पीछे-पीछे चले गए. उन सबने ये शाखाएं भीतरी कमरों में
रख दीं और उसमें आग लगा दी. वहां सभी अगुए इकट्ठे थे,
इस कारण शेकेम के मीनार के कमरे में जो थे उन सभी
अधिकारियों की मृत्यु हो गई, ये लगभग एक हज़ार स्त्री-पुरुष
थे.

50 इसके बाद अबीमेलेक तेबेज़ नगर को गया, नगर की
घेराबंदी की और उसे अपने वश में कर लिया.

51 किंतु नगर के बीच में एक मजबूत मीनार था. नगर के बचे
हुए सभी स्त्री-पुरुषों ने एवं अगुओं ने भागकर उसी में सहारा
लिया और दरवाजे बंद कर लिए और वे सब मीनार की छत
पर चढ़ गए.

52 अबीमेलेक ने आकर उस मीनार पर हमला किया. वह
मीनार में आग लगाने के उद्देश्य से द्वार के पास आया ही था,

53 कि एक स्त्री ने चक्की का ऊपरी पाट अबीमेलेक के ऊपर
गिरा दिया. इससे उसकी खोपड़ी कुचल गई.

54 उसने तुरंत अपने युवा हथियार ढोनेवाले को बुलाकर
आदेश दिया, “अपनी तलवार निकालो और आज़ाद करो मुझे
इस स्थिति से, ताकि मेरे संबंध में यह न कहा जाए: ‘एक स्त्री
ने उसकी हत्या कर दी.’ ” सो उस युवा ने उसे तलवार से बेध
दिया, उसकी मृत्यु हो गई.

55 जब इस्राएलियों ने देखा कि अबीमेलेक की मृत्यु हो गई है,
वे सब अपने-अपने घर लौट गए.

56 इस प्रकार परमेश्वर ने अबीमेलेक से उस दुष्टता का बदला
ले लिया, जो उसने अपने सत्तर भाइयों की हत्या करने के द्वारा
अपने पिता के विरुद्ध की थी.

57 इसके अलावा परमेश्वर ने शेकेम निवासियों की सारी दुष्टता
का भी बदला ले लिया, और यरूबाल के पुत्र योथाम का शाप
उनके सिर पर आ पड़ा.

## Judges 10:1

1 अबीमेलेक की मृत्यु के बाद इस्साखार प्रदेश से दोदो के
पोते, पुआह के पुत्र तोला का उदय इस्राएल के छुड़ानेवाले के
रूप में हुआ. वह एफ्राईम के पहाड़ी इलाके के शामीर नगर
का निवासी था.

2 उसने तेईस वर्ष इस्राएल पर शासन किया, इसके बाद
उसकी मृत्यु हो गई और शामीर में उसे गाड़ा गया.

3 उसके बाद गिलआदवासी याईर का उदय हुआ. उसने
बाईस वर्ष इस्राएल पर शासन किया.

4 उसके तीस पुत्र थे, जो तीस गधों पर यात्रा करते थे. गिलआद
प्रदेश में तीस नगर उनके अधिकार में थे. जो आज तक
हव्वोथ-याईर नाम से मशहूर हैं.

5 याईर की मृत्यु होने पर उसे कामोन में गाड़ा गया.

6 इस्राएल के वंशजों ने दोबारा वही किया, जो याहवेह की
नज़रों में गलत था. उन्होंने बाल तथा अश्तोरेथ, अराम के,
सीदोन के, मोआब के, अम्मोन वंशजों के तथा फिलिस्तीनियों
के देवताओं की सेवा-उपासना करना शुरू कर दिया. उन्होंने
याहवेह को भुला दिया, और उनकी सेवा-वन्दना का त्याग कर
दिया.

7 याहवेह का क्रोध इस्राएल पर भड़क उठा. याहवेह ने उन्हें
फिलिस्तीनियों तथा अम्मोन वंशजों के हाथों में बेच दिया.

8 उस पूरे साल वे इस्राएल वंशजों को सताते और पीसते रहे.
वे गिलआद में यरदन के पार बसे हुए इस्राएल के वंशजों को
अठारह वर्ष तक सताते रहे.

9 अम्मोन वंशज यरदन पार कर यहूदिया, बिन्यामिन प्रदेश
तथा एफ्राईम वंशजों से भी युद्ध करते रहे, इससे इस्राएल
वंशज बहुत ही संकट में पड़ गए थे.

10 तब इस्राएल वंशजों ने याहवेह की दोहाई दी, “हमने आपके
विरुद्ध पाप किया है. हमने वास्तव में अपने परमेश्वर को
छोड़कर बाल देवताओं की सेवा-उपासना की है.”

11 याहवेह ने इस्राएल संतानों को उत्तर दिया, “क्या मैं ही वह
न था, जिसने तुम्हें मिस्रियों, अमोरियों, अम्मोनियों तथा
फिलिस्तीनियों की बंधुआई से,

12 और, जब सीदोनी, अमालेक तथा माओनी तुम्हें सता रहे थे,
तुमने मेरी दोहाई दी, और क्या मैंने तुम्हें उनकी अधीनता से
नहीं छुड़ाया?

13 यह सब होने पर भी तुमने मुझे भुला दिया और अन्य
देवताओं की सेवा-उपासना की, इस कारण अब मैं तुम्हें न
छुड़ाऊंगा.

14 जाओ, उन्हीं देवताओं की दोहाई दो, जिन्हें तुमने अपने लिए
चुन रखा है. उन्हें ही तुम्हें तुम्हारे संकट के अवसर पर
सहायता करने दो.”

15 इस्राएल वंशजों ने याहवेह से विनती की, “हमने पाप किया
है. हमारे साथ वही कीजिए, जो आपको सही लगे; मगर आज
हमें कृपा कर छुटकारा दे दीजिए.”

16 उन्होंने अपने बीच से सारे पराए देवता हटा दिए और वे
याहवेह की सेवा-वन्दना करने लगे. अब याहवेह से इस्राएल
की दुर्दशा देखी न गई.

17 वहां अम्मोन वंशजों को बुलाया गया और उन्होंने गिलआद
में पड़ाव खड़े कर दिए. इस्राएल वंशज इकट्ठे हुए और
उन्होंने मिज़पाह में पड़ाव खड़े किए.

18 गिलआद के नायक आपस में विचार करने लगे: “कौन
होगा वह व्यक्ति, जो अम्मोन वंशजों से युद्ध शुरू करेगा? वही
बनेगा गिलआद वासियों का प्रधान.”

*Judges 11:1*

## Judges 11:1

1 गिलआदवासी यिफ्ताह एक बहादुर योद्धा था; किंतु वह एक
वेश्या का पुत्र था. उसके पिता का नाम गिलआद था.

2 गिलआद की पत्नी से भी पुत्र पैदा हुए. जब ये पुत्र बड़े हुए,
तब उन्होंने उसे यह कहते हुए घर से निकाल दिया: "तुम तो
पराई स्त्री से जन्मे हो, इस कारण हमारे पिता की मीरास में
तुम्हारा कोई भाग न होगा."

3 तब यिफ्ताह अपने भाइयों से दूर भागकर तोब देश में रहने
लगा. वहां निकम्मे, खराब लोग उसके साथी बनते चले गए, जो
उसके साथ साथ रहते थे.

4 कुछ समय बाद अम्मोन वंशजों ने इस्राएलियों से युद्ध छेड़
दिया.

5 जब अम्मोन वंशज इस्राएल से युद्ध कर रहे थे, गिलआद के
अगुए लोग तोब देश से यिफ्ताह को लेने जा पहुंचे.

6 उन्होंने यिफ्ताह से विनती की, "आकर हमारे सेनापति का
कार्यभार संभाल लो, कि हम अम्मोनियों से युद्ध कर सकें."

7 गिलआद के अगुओं को यिफ्ताह ने उत्तर दिया, "क्या आप
ही नहीं थे, जिन्होंने घृणा करके मुझे मेरे पिता के घर से बाहर
निकाल दिया था? अब, जब आप पर संकट आ पड़ा है, तो
आप लोग मेरे पास क्यों आए हैं?"

8 गिलआद के अगुओं ने यिफ्ताह को उत्तर दिया, "तुम्हारे पास
हमारे लौटने का कारण सिर्फ यह है कि तुम हमारे साथ चलो
और अम्मोन वंशजों से युद्ध कर सारे गिलआद वासियों के
प्रधान बन जाओ."

9 इस पर यिफ्ताह ने गिलआद के अगुओं से प्रश्न किया,
"अर्थात् यदि आप मुझे अम्मोन वंशजों से युद्ध करने के उद्देश्य
से वापस ले जाते हैं, और याहवेह उन्हें मेरे अधीन कर देते हैं,
तो मैं आपका प्रधान बन जाऊंगा?"

10 गिलआद के पुरनियों ने यिफ्ताह को उत्तर दिया, "स्वयं
याहवेह हमारे बीच गवाह हैं, निश्चय ही हम ठीक वैसा ही करेंगे
जैसा तुमने अभी कहा है."

11 सो यिफ्ताह गिलआद के पुरनियों के साथ चला गया.
प्रजाजनों ने उसे अपने ऊपर अधिनायक एवं प्रधान नियुक्त
कर दिया. यिफ्ताह ने मिज़पाह में याहवेह के सामने पूरी वाचा
दोहरा दी.

12 यिफ्ताह ने तब अम्मोन वंशजों के राजा को इस संदेश के
साथ दूत भेज दिए: "मैंने आपकी ऐसी क्या हानि कर दी है,
जिसके निमित्त आप हमारे देश से युद्ध करने आ गए हैं?"

13 अम्मोन वंशजों के राजा ने यिफ्ताह के दूतों को उत्तर दिया,
"मिस्र से निकलकर आते हुए इस्राएल ने आरनोन से लेकर
यब्बोक तथा यरदन तक की भूमि पर कब्जा कर लिया था.
इसलिये अब सही होगा कि शांतिपूर्वक यह भूमि हमें लौटा दी
जाए."

14 यिफ्ताह ने अम्मोन वंशजों के राजा के लिए दोबारा दूत भेजे.

15 उन्होंने राजा से यों कहने को आदेश दिया, "यिफ्ताह का
संदेश यह है: इस्राएल ने न तो मोआब की भूमि पर कब्जा
किया है, और न ही अम्मोन वंशजों की.

16 क्योंकि जब इस्राएल मिस्र देश से निकला, वह निर्जन प्रदेश
में से लाल सागर पहुंचा और वहां से कादेश को.

17 वहां पहुंचकर इस्राएल ने एदोम के राजा के लिए दूतों से
यह संदेश भेजा था: 'कृपा कर हमें आपके देश में से होकर
आगे जाने की आज्ञा दीजिए!' किंतु एदोम के राजा ने इस
विनती की ओर तनिक भी ध्यान न दिया. उन्होंने यही विनती
मोआब के राजा से भी की, किंतु वह भी इसके लिए राज़ी न
हुआ. इस कारण इस्राएल कादेश में ही रुक गया.

18 "तब उन्होंने निर्जन प्रदेश में से यात्रा की. इसके लिए उन्हें
एदोम और मोआब देशों में प्रवेश न करते हुए, घूमकर आगे
बढ़ना पड़ा, और वे मोआब देश के पूर्व में पहुंच गए. उन्होंने
आरनोन के दूसरी ओर छावनी डाल दी और मोआब की सीमा
में प्रवेश किया ही नहीं. आरनोन मोआब की सीमा पर था.

19 "इसके बाद इस्राएल ने अमोरियों के राजा सीहोन को, जो
हेशबोन से शासन कर रहे थे, दूतों द्वारा यह संदेश भेजा,
'कृपया हमें अपने देश में से होकर हमारे देश में पहुंचने की
आज्ञा दीजिए.'

*Judges 11:1*

20 किंतु सीहोन ने इस्राएल पर भरोसा ही न किया, कि वह
उसके देश की सीमा से होकर निकल जाएगा. इस कारण
सीहोन ने अपनी सेना तैयार की, यहत्स में छावनी ड़ाल दी और
इस्राएल से युद्ध करने लगा.

21 "याहवेह, इस्राएल के परमेश्वर ने सीहोन तथा उसकी सारी
सेना को इस्राएल के अधीन कर दिया; उन्होंने उन्हें हरा दिया.
फलस्वरूप उस देश के निवासी तथा सारे अमोरी देश
इस्राएल के अधिकार में आ गए.

22 आरनोन से लेकर यब्बोक तक तथा निर्जन प्रदेश से लेकर
यरदन तक का सारा क्षेत्र उनका हो गया.

23 "अब आप ही बताइए, जब याहवेह, इस्राएल के परमेश्वर ने
ही अमोरियों को अपनी प्रजा इस्राएल के सामने से हटा दिया
है, क्या आपका इस पर कोई अधिकार रह जाता है?

24 क्या आप स्वयं उस पर अधिकार नहीं किए हुए हैं, जो
आपने अपने देवता खेमोश से पाया है? इसलिये, इसी प्रकार
जो जगह याहवेह, हमारे परमेश्वर द्वारा हमारे सामने खाली
करवाई गई है, हम उस पर अधिकार बनाए रखेंगे.

25 क्या आप ज़ीप्पोर के पुत्र मोआब के राजा बालाक से
बढ़कर हैं? क्या उसने कभी भी इस्राएल का सामना करने का
साहस किया था अथवा क्या उसने कभी भी इस्राएल से युद्ध
किया?

26 जब इस्राएल तीन सौ वर्षों से हेशबोन और उसके गांवों में,
अरोअर तथा उसके गांवों में तथा आरनोन के तटवर्ती नगरों
में रहता रहा, आपने उन्हें उसी समय वापस कब्जा करने की
कोशिश क्यों नहीं की?

27 इन बातों के प्रकाश में मैंने आपके विरुद्ध कोई पाप नहीं
किया है, बल्कि आप ही मुझसे युद्ध करने की भूल कर रहे हैं.
याहवेह, जो न्यायाध्यक्ष हैं, वही आज इस्राएल वंशजों तथा
अम्मोन वंशजों के बीच न्याय करें."

28 किंतु अम्मोन वंशजों के राजा ने यिफ्ताह द्वारा भेजे संदेश
को न माना.

29 इसी समय याहवेह का आत्मा यिफ्ताह पर उतरी. वह
गिलआद एवं मनश्शेह में से होता हुआ आगे बढ़ा. इसके बाद
वह मिज़पाह के गिलआद में से होता हुआ, वह अम्मोन वंशजों
के क्षेत्र में जा पहुंचा.

30 यिफ्ताह ने याहवेह के सामने यह शपथ ली, "यदि आप
वास्तव में अम्मोन वंशजों को मेरे अधीन कर देंगे,

31 जब मैं अम्मोन वंशजों से सुरक्षित लौट आऊंगा, तब मेरे
निवास के द्वारों में से जो कोई मुझसे भेंटकरने बाहर आएगा,
वह याहवेह का हो जाएगा-मैं उसे होमबलि के रूप में चढ़ा
दूंगा."

32 यिफ्ताह ने आगे बढ़कर अम्मोन वंशजों पर हमला कर
दिया. याहवेह ने उन्हें उसके अधीन कर दिया.

33 अरोअर से लेकर मिन्निथ के प्रवेश तक बीस नगरों में तथा
आबेल-केरामिन तक उसने घोर संहार किया. इस प्रकार
अम्मोन वंशज, इस्राएल वंशजों के सामने हार गए.

34 जब यिफ्ताह अपने आवास मिज़पाह लौटा, उसने देखा, कि
उसकी पुत्री डफ बजाती नाचती हुई उससे भेंटकरने आ रही
थी. वह यिफ्ताह की एकलौती संतान थी. उसके अलावा
उसके न तो कोई पुत्र था, न कोई पुत्री.

35 जैसे ही उसकी नज़र अपनी पुत्री पर पड़ी, उसने अपने वस्त्र
फाड़ डाले और कहा, "हाय, मेरी पुत्री! तुमने तो मुझे खत्म ही
कर दिया. तुम मेरे शोक का कारण हो गई हो. मैंने याहवेह को
वचन दिया है, जिसे मैं मना नहीं कर सकता."

36 यह सुन उसकी पुत्री ने यिफ्ताह को उत्तर दिया, "पिताजी,
आपने शपथ याहवेह से की है. मेरे साथ आप वही कीजिए,
जैसा आपने कहा है; क्योंकि याहवेह ने आपके द्वारा अम्मोन
वंशजों, आपके शत्रुओं से बदला लिया है."

37 उसने अपने पिता से यह भी कहा, "जैसा आपने कहा है,
मेरे साथ वैसा ही किया जाए; सिर्फ मुझे दो महीने के लिए
अकेली छोड़ दिया जाए, कि मैं अपनी सहेलियों के साथ
पहाड़ों पर जाकर अपने कुंवारी ही रह जाने के लिए रोऊंगी."

*Judges 12:1*

38 “जाओ,” यिफ्ताह ने कहा और उसने दो महीने के लिए
अपनी पुत्री को विदा कर दिया. वह चली गई और पहाड़ों पर
अपने कुंवारी रह जाने के लिए रोती रही.

39 दो महीने पूरे होने पर वह लौटी और यिफ्ताह ने उसके
विषय में अपनी शपथ पूरी की, किसी पुरुष से उसका संबंध
न हुआ था. इस्राएल में इसकी याद में एक प्रथा प्रचलित हो
गई:

40 इस्राएली कन्याएं हर साल गिलआदवासी यिफ्ताह की पुत्री
की याद में चार दिन विलाप करती हैं.

## Judges 12:1

1 तब एफ्राईमवासियों ने सेना इकट्ठा किया. उन्होंने ज़ेफोन
जाकर यिफ्ताह से यह कहके झगड़ा किया, “क्या मतलब था
आपका हमें अपने साथ लिए बिना अम्मोन वंशजों से युद्ध के
लिए जाने का? हम आपके साथ आपके घर में आग लगा देंगे.”

2 यिफ्ताह ने उन्हें उत्तर दिया, “अम्मोन वंशजों के साथ मेरा
और मेरे साथियों का बड़ा झगड़ा हो गया था. मैंने आपको
बुलाया तो था, किंतु आपने आकर मुझे उनसे नहीं छुड़ाया.

3 जब मैंने देखा कि मुझे छुड़ाने में आपकी रुचि नहीं है, मैंने
अपनी जान हथेली में लेकर अम्मोन वंशजों पर हमला किया,
और याहवेह ने उन्हें हमारे वश में कर दिया. आप लोग अब
मुझसे झगड़ा करने क्यों आए हैं?”

4 इस कारण यिफ्ताह ने गिलआद के सारे सैनिकों को इकट्ठा
किया और एफ्राईम से युद्ध करके गिलआद के सैनिकों ने
उन्हें हरा दिया, क्योंकि एफ्राईमवासियों ने गिलआद वासियों
पर आरोप लगाया था, “तुम गिलआदवासी तो एफ्राईम के
भगोड़े हो. तुम तो एफ्राईम तथा मनश्शेह के ही वासी हो.”

5 गिलआद वासियों ने एफ्राईम के पास वाले यरदन के घाट
अपने वश में कर लिए. जब कभी कोई व्यक्ति एफ्राईम से
भागने की कोशिश में कहता था, “मुझे पार जाने दो,”
गिलआदवासी उससे प्रश्न करते थे, “क्या तुम एफ्राईमवासी
हो?” यदि वह उत्तर देता था, “नहीं,”

6 तब गिलआदवासी उसे आदेश देते थे; कहो, “शिब्बोलेथ.”
किंतु वह उच्चारण करता था, “सिब्बोलेथ,” क्योंकि उसके
लिए इस शब्द का शुद्ध उच्चारण संभव नहीं होता था. यह होने
पर गिलआदवासी उसे वहीं पकड़कर यरदन के घाटों में मार
दिया करते थे. उस समय इस प्रक्रिया में एफ्राईम के बयालीस
हज़ार व्यक्तियों को मार दिया गया.

7 यिफ्ताह छः साल तक इस्राएल का शासन करता रहा. इसके
बाद गिलआदवासी यिफ्ताह की मृत्यु हो गई. उसे गिलआद
के ही एक नगर में गाड़ दिया गया.

8 यिफ्ताह के बाद बेथलेहेम के इबज़न ने इस्राएल के शासन
की जवाबदारी संभाली.

9 उसके तीस पुत्र और तीस ही पुत्रियां थी, जिनका विवाह
उसने बाहर के गोत्र में किया था. इसी प्रकार उसने अपने पुत्रों
का विवाह बाहरी गोत्रों में कर दिया था. उसने इस्राएल का
शासन सात सालों तक किया.

10 इसके बाद इबज़न की मृत्यु हो गई, और उसे बेथलेहेम में
गाड़ दिया गया.

11 उसके बाद ज़ेबुलूनवासी एलोन इस्राएल का शासक हुआ.
उसने दस साल तक इस्राएल पर शासन किया.

12 ज़ेबुलूनवासी एलोन की मृत्यु हुई और उसे ज़ेबुलून देश में
अय्जालोन में गाड़ दिया गया.

13 उसके बाद पीराथोनवासी हिल्लेल का पुत्र अबदोन
इस्राएल का शासक हुआ.

14 उसके चालीस पुत्र और तीस पोते थे, जो सत्तर गधों पर
आना-जाना करते थे. उसने आठ साल इस्राएल का शासन
किया.

15 पीराथोनवासी हिल्लेल के पुत्र अबदोन की मृत्यु हो गई. उसे
एफ्राईम देश के पिराथोन में अमालेकियों के पहाड़ी इलाके में
गाड़ दिया गया.

*Judges 13:1*

## Judges 13:1

1 एक बार फिर इस्राएल वंशजों ने वह किया, जो याहवेह की
नज़रों में गलत था. इस कारण याहवेह ने चालीस सालों के लिए
उन्हें फिलिस्तीनियों के वश में कर दिया.

2 दान के गोत्र से एक ज़ोराहवासी आदमी था, जिसका नाम
मानोहा था. उसकी पत्नी बांझ थी. उससे कोई संतान न हुई थी.

3 इस स्त्री के सामने याहवेह के दूत ने प्रकट होकर उससे
कहा, "सुनो! तुम, जो बांझ हो, जिसके कोई संतान पैदा न हुई
है, गर्भधारण करोगी और एक पुत्र को जन्म दोगी.

4 अब तुम्हें यह सावधानी रखनी होगी कि तुम न तो अंगूर का
रस पीओगी न दाखमधु, और न ही सांस्कारिक रूप से किसी
भी अशुद्ध भोजन खाओगी.

5 क्योंकि तुम्हें याद रखना होगा कि तुम गर्भधारण करके एक
पुत्र को जन्म दोगी. गर्भधारण के समय से ही वह परमेश्वर के
लिए नाज़ीर होगा, इसलिये उसके सिर पर उस्तरा कभी न
फेरा जाए. वही इस्राएल को फिलिस्तीनियों से छुड़ाने में नेतृत्व
करेगा."

6 स्त्री ने जाकर अपने पति को बताया: "परमेश्वर का एक पुरुष
मेरे पास आया था. उसका स्वरूप परमेश्वर के एक दूत के
समान था—बहुत ही भयानक! न तो मैंने उससे यह पूछा कि
वह कहां से आया है, और न ही उसने मुझे अपना नाम बताने
की ज़रूरत समझी.

7 उसने मुझे बताया, 'सुनो! तुम गर्भधारण करके एक पुत्र को
जन्म दोगी. अब से तुम अंगूर का रस, दाखमधु और
सांस्कारिक रूप से किसी भी अशुद्ध वस्तु का सेवन नहीं
करोगी, क्योंकि जन्म से लेकर मृत्यु तक वह बालक परमेश्वर
के लिए नाज़ीर होगा.' "

8 यह सुन मानोहा ने याहवेह से विनती करते हुए कहा, "प्रभु,
आपके द्वारा भेजे गए परमेश्वर के दूत को हमारे पास दोबारा
भेज दीजिए, कि आनेवाले शिशु के लिए हमें क्या-क्या करना
सही होगा वह हमें सिखा सके."

9 परमेश्वर ने मानोहा की विनती सुन ली, और परमेश्वर का दूत
दोबारा उस स्त्री के पास आया. इस समय वह खेत में बैठी हुई
थी. उसका पति मानोहा उस समय उसके साथ न था.

10 सो वह स्त्री दौड़ी-दौड़ी गई और अपने पति को इसकी
ख़बर दी, "सुनिए, उस दिन जो व्यक्ति मुझे दिखाई दिया था,
मुझ पर दोबारा प्रकट हुआ है."

11 मानोहा उठकर अपनी पत्नी के साथ चला गया. उस व्यक्ति
के निकट पहुंचकर उसने प्रश्न किया, "क्या आप ही वह हैं,
जिसने इस स्त्री से बातचीत की थी?" "हां, मैं ही हूं." उसने उत्तर
दिया.

12 मानोहा ने आगे पूछा, "जब आपकी कही हुई बातें पूरी
होंगी, मेरे पुत्र की जीवनशैली कैसी होगी और क्या होगा
उसका कार्य?"

13 याहवेह के दूत ने मानोहा को उत्तर दिया, "मैंने स्त्री से जो
कुछ कहा है, वह उसी का ध्यान रखे.

14 वह अंगूर की किसी उपज को न खाए, न अंगूर का रस पिए
न दाखमधु, और न सांस्कारिक रूप से किसी भी अशुद्ध वस्तु
को खाए. ज़रूरी है कि वह मेरे द्वारा दिए गए आदेशों का
पालन करे."

15 तब मानोहा ने याहवेह के दूत से विनती की, "हम विनती
करके आपको यहां रोकना चाहते हैं कि हम आपके लिए
भोजन तैयार करें."

16 याहवेह के दूत ने मानोहा से कहा, "मैं रुक तो जाऊंगा,
किंतु भोजन नहीं करूंगा. हां, जब तुम भोजन तैयार कर ही
रहे हो, तो इसे याहवेह को होमबलि चढ़ा देना." मानोहा को
यह बोध ही न था कि वह याहवेह का दूत था.

17 मानोहा ने याहवेह के दूत से पूछा, "आपका नाम क्या है?
आपकी कही हुई बातें पूरी होने पर हम आपका आदर-
सत्कार करना चाहते हैं."

18 याहवेह के दूत ने उसे उत्तर दिया, "क्यों पूछ रहे हो मेरा
नाम, क्या इसलिये कि तुम्हें यह सब देख हैरानी हो रही है?"

19 इस कारण मानोहा ने उसी चट्टान पर याहवेह को मेमना
और अन्नबलि चढ़ाई. जब मानोहा और उसकी पत्नी यह सब
देख ही रहे थे, याहवेह ने एक अद्भुत काम कर दिखाया:

20 जब वेदी से लपटें आकाश की ओर उठ रही थी, याहवेह
का दूत वेदी की आग की लौ में होकर ऊपर चढ़ गया. यह
देख मानोहा और उसकी पत्नी ने दंडवत होकर वंदना की.

21 इसके बाद याहवेह का दूत उन पर दोबारा प्रकट न हुआ.
अब मानोहा को यह समझ गया कि वह याहवेह का दूत था.

22 मानोहा ने अपनी पत्नी से कहा, “अब हमारी मृत्यु तय है,
हमने परमेश्वर को साक्षात देख लिया है.”

23 किंतु उसकी पत्नी ने उससे कहा, “यदि याहवेह का उद्देश्य
हमारी मृत्यु ही होती तो वह हमारे द्वारा चढ़ाई होमबलि एवं
अन्नबलि स्वीकार क्यों करते? या वह क्यों हम पर यह सब
प्रकट करते? अथवा वह हमारे सामने इन सब की घोषणा
करते?”

24 उस स्त्री ने एक पुत्र को जन्म दिया, और उसका नाम
शिमशोन रखा. बालक बड़ा हुआ. उस पर याहवेह की
कृपादृष्टि थी.

25 उस समय याहवेह का आत्मा उसे माहानेह-दान में, जो
ज़ोराह तथा एशताओल के बीच में है, आत्मा उसे उभारने लगे.

## Judges 14:1

1 एक समय पर, जब शिमशोन तिमनाह नगर को गया हुआ
था, उसने वहां एक फिलिस्तीनी कन्या देखी.

2 वहां से लौटने पर उसने अपने माता-पिता से कहा, “तिमनाह
में मैंने एक फिलिस्तीनी लड़की देखी है; उससे मेरा विवाह
कर दीजिए.”

3 उसके माता-पिता ने उत्तर में उससे कहा, “तुम्हारे संबंधियों
में, अथवा हमारे सजातियों में क्या कोई भी लड़की नहीं है, कि
तुम्हें ख़तना रहित फिलिस्तीनियों में की पुत्री से विवाह करने
की सूझी है?” किंतु शिमशोन ने उन्हें उत्तर दिया, “मेरा विवाह
उसी से कर दीजिए, मुझे वही भा गई है.”

4 यद्यपि उसके माता-पिता को यह मालूम न था कि यह
याहवेह की योजना थी, क्योंकि वह फिलिस्तीनियों से बदले
का अवसर खोज रहा था, इस समय फिलिस्ती इस्राएल पर
शासन कर रहे थे.

5 शिमशोन अपने माता-पिता के साथ तिमनाह गया. जब वे
तिमनाह के अंगूरों के बगीचों तक पहुंचे, एक जवान शेर
दहाड़ता हुआ उस पर लपका.

6 बड़ी सामर्थ्य के साथ याहवेह का आत्मा उस पर उतरा.
शिमशोन ने उसे इस रीति से फाड़ डाला, जैसे कोई एक मेमने
को फाड़ देता है, जबकि शिमशोन के हाथों में कोई भी
हथियार न था. इस काम की चर्चा उसने अपने माता-पिता से
नहीं की.

7 उसने जाकर उस स्त्री से बातचीत की. वह उसे प्रिय लगी.

8 कुछ समय बाद उस कन्या से विवाह करने के लिए वह
तिमनाह लौटा. शेर का शव देखने के लिए मार्ग से मुड़ा. उसने
देखा कि शेर के शव में मधुमक्खियों का छत्ता तथा उसमें
शहद लगा हुआ था.

9 उसने अपने हाथों में वह शहद ले लिया और उसे खाता हुआ
आगे बढ़ गया. जब वह अपने माता-पिता के पास पहुंचा,
उसने उन्हें भी वह शहद दिया और उन्होंने भी उसे खाया,
किंतु शिमशोन ने उन्हें यह न बताया कि उसने यह मधु शेर के
शव में से निकाला था.

10 तब उसका पिता उस स्त्री के घर पर पहुंचा. शिमशोन ने
वहां एक भोज आयोजित किया, जैसा कि वहां के युवकों की
रीति थी.

11 जब उन्होंने देखा और उन्होंने उसके साथ साथ रहने के
लिए तीस युवक चुन दिए.

12 शिमशोन ने उनसे कहा, “मैं तुम्हारे विचारने के लिए एक
पहेली देता हूं; यदि तुम विवाहोत्सव के सात दिन के भीतर यह
पहेली का समझ बूझ कर मुझे इसका उत्तर दे दोगे, तो मैं तुम्हें
मलमल के तीस बाहरी वस्त्र और तीस जोड़े कपड़े दूंगा.

13 मगर, यदि तुम इसका उत्तर न दे सको, तो तुम्हें मुझे तीस
बाहरी वस्त्र और तीस जोड़े कपड़े देना पड़ेंगे." उन्होंने उत्तर
दिया, "पेश करो अपनी पहेली, हम सुन रहे हैं."

14 शिमशोन ने कहा, "खानेवाले में से भोजन, तथा बलवंत में
से मिठास." तीन दिन बीत गए मगर इस पहेली का उत्तर वे न
दे सके.

15 चौथे दिन उन्होंने शिमशोन की पत्नी से कहा, "अपने पति
को फुसलाओ, कि वह उस पहेली का मतलब हमें बता दे.
अगर नहीं, तो हम तुम्हें और तुम्हारे पिता के घर को आग लगा
देंगे, क्या हमें आमंत्रित करने में तुम्हारी मंशा हमें कंगाल कर
देने की थी? क्या यही सच नहीं?"

16 शिमशोन की पत्नी उसके सामने रोने लगी. और उसने
शिमशोन से कहा, "तुम तो मुझसे नफरत करते हो. तुम्हें
मुझसे प्रेम है ही नहीं. मेरे जाति वाले युवाओं के सामने तुमने
पहेली प्रस्तुत की, और मुझे इसका हल नहीं बताया."
शिमशोन ने साफ़ किया, "देखो, इसका हल तो मैंने अपने
माता-पिता तक को नहीं बताया है, क्या मैं यह तुम्हें बता दूं?"

17 फिर भी सातों दिन, जब तक विवाहोत्सव चलता रहा, वह
रोती रही. अंत में सातवें दिन शिमशोन ने उसे पहेली का हल
बता ही दिया; उसकी पत्नी ने उसे इस सीमा तक तंग कर दिया
था. उसने जाकर अपने जाति वाले युवकों को पहेली का उत्तर
जा सुनाया.

18 सातवें दिन सूरज डूबने के पहले, उन नगरवासियों ने
जाकर शिमशोन से कहा, "क्या हो सकता है शहद से मीठा?
कौन है शेर से अधिक बलवान? "शिमशोन ने उनसे कहा,
"यदि तुमने मेरी बछिया से खेत न जोता होता, तो मेरी पहेली
का उत्तर बिन सुलझा ही रहता."

19 तब बड़ी ही सामर्थ्य के साथ याहवेह का आत्मा शिमशोन
पर उतरी. वह अश्कलोन गया, तीस व्यक्तियों को मार
गिराया, उनका सामान इकट्ठा कर उसने वे कपड़े उन्हें दिए,
जिन्होंने उस पहेली का उत्तर दे दिया था. उसका क्रोध
भड़कता हुआ वह अपने पिता के घर को लौट गया.

20 शिमशोन की पत्नी उसके उस साथी को दे दी गई, जो
उसका मित्र था.

## Judges 15:1

1 कुछ समय बाद, गेहूं की कटनी के समय पर शिमशोन एक
मेमना लेकर अपनी पत्नी से भेंटकरने गया: उसने उसके पिता
से कहा, "मुझे अपनी पत्नी के कमरे में जाने की अनुमति
दीजिए." किंतु उसके ससुर ने उसे अनुमति नहीं दी.

2 उसके ससुर ने उससे कहा, "मुझे तो यह लगा कि तुम्हें उससे
घोर नफरत हो गई है; इसलिये मैंने उसे तुम्हारे साथी को दे
दिया है. सुनो, क्या उसकी छोटी बहन उससे अधिक सुंदर
नहीं है? अपनी पत्नी के स्थान पर तुम उसकी छोटी बहन को
ले लो."

3 इस पर शिमशोन ने कहा, "अब यदि फिलिस्तीनियों का कोई
नुकसान होता है, तो मुझे दोष न देना."

4 शिमशोन ने जाकर तीन सौ लोमड़ियां पकड़ी, दो-दो
लोमड़ियों की पूछो को बांधकर उनके बीच एक-एक मशाल
बांध दी.

5 जब उसने मशालों को जला लिया, उसने लोमड़ियों को
फिलिस्तीनियों की खड़ी उपज में छोड़ दिया. इससे उनकी
पुलियां तथा खड़ी हुई उपज जल गई. इसके अलावा उनके
अंगूर के बगीचे और जैतून के बगीचे भी नष्ट होते गए.

6 फिलिस्तीनी पूछताछ करने लगे, "किसने किया है यह?"
और उन्हें बताया गया, "शिमशोन, तिमनी के दामाद ने,
क्योंकि तिमनी ने उसकी पत्नी उसके साथी को दे दी है."
इसलिये फिलिस्तीनी आए और उसकी पत्नी और ससुर को
जला दिया.

7 शिमशोन ने उनसे कहा, "तुमने जो कदम उठाया है, उसके
कारण मैं शपथ खाता हूं कि जब तक मैं तो इसका बदला नहीं
लूंगा, तब तक मैं शांति से नहीं बैठूंगा."

8 फिर उसने बड़ी निर्दयता से उनको मार डाला और उसके
बाद जाकर एथाम की चट्टान की गुफा में रहने लगा.

9 फिलिस्तीनियों ने यहूदिया में पड़ाव डाल दिए, और उधर के
लेही नगर पर हमला कर दिया.

10 यहूदिया के रहनेवालों ने उनसे पूछा, “हम पर हमला क्यों?”
उन्होंने उत्तर दिया, “शिमशोन को बांधकर ले जाने के लिए
हम आए हैं, ताकि हम उससे बदला लें.”

11 इसलिये यहूदिया के रहनेवाले तीन हज़ार लोग एथाम की
चट्टान पर जाकर शिमशोन से कहने लगे, “क्या तुम भूल गए
कि फिलिस्तीनी हमारे शासक हैं? तुमने हमारे साथ यह क्या
कर डाला है?” शिमशोन ने उन्हें उत्तर दिया, “जैसा उन्होंने मेरे
साथ किया, वैसा ही मैंने भी उनके साथ किया है.”

12 यहूदिया के रहनेवालों ने उससे कहा, “तुम्हें बंदी बनाकर
फिलिस्तीनियों को सौंप देने के लिए हम यहां आए हैं.”
शिमशोन ने उनसे कहा, “बस, मुझसे शपथ लो, कि तुम मेरी
हत्या न करोगे.”

13 उन्होंने उसे आश्वासन दिया, “नहीं, नहीं, हम तुम्हें अच्छी
तरह से बांधकर फिलिस्तीनियों को सौंप देंगे. मगर हम
तुम्हारी हत्या नहीं करेंगे.” तब उन्होंने शिमशोन को दो नई
रस्सियां लेकर बांध दिया और उसे गुफा में से बाहर ले आए.

14 जब वे लेही पहुंचे, फिलिस्तीनी उससे मिलने के लिए
चिल्लाते हुए आ गए. याहवेह का आत्मा सामर्थ्य में शिमशोन
पर उतरा. उसकी बांधी गई रस्सियां ऐसी हो गईं जैसे आग में
जला हुआ सन. उसके बंधन उसके हाथों से गिर पड़े.

15 उसे वहीं एक गधे के जबड़े की हड्डी मिली, जिसे उसने उठा
लिया और उससे एक हज़ार फिलिस्तीनियों को मार डाला.

16 तब शिमशोन ने कहा, “गधे के जबड़े की हड्डी से मैंने उनके
ढेर पर ढेर लगा दिए. गधे के जबड़े की हड्डी से मैंने एक हज़ार
व्यक्तियों को मार दिया.”

17 यह कहकर उसने गधे के जबड़े की हड्डी फेंक दी. वह
स्थान रामात-लेही नाम से मशहूर हो गया.

18 तब वह बहुत ही प्यासा हो गया. उसने इन शब्दों में याहवेह
की दोहाई दी, “आपने अपने सेवक को यह महान विजय दी
है; अब क्या मैं इस प्यास के कारण इन खतना-रहित लोगों
द्वारा मारा जाऊंगा?”

19 तब परमेश्वर ने लेही की भूमि के उस गड्ढे को ऐसा फाड़
दिया, कि उसमें से जल निकलने लगा. जब शिमशोन ने उसे
पिया, उसमें दोबारा बल आ गया और वह फिर से ताजा हो
गया. इस घटना के कारण उसने उस स्थान को एन-हक्कोरे
नाम दिया. लेही में यह आज तक बना हुआ है.

20 फिलिस्तीनियों के शासनकाल में शिमशोन ने बीस साल
तक इस्राएल पर शासन किया.

## Judges 16:1

1 जब शिमशोन अज्जाह गया हुआ था, वहां उसकी नज़र एक
वेश्या पर पड़ी, उसने उसके साथ संबंध बनाए.

2 अज्जावासियों को बताया गया: “शिमशोन यहां आया हुआ
है.” यह सुन उन्होंने उस स्थान को घेर लिया और सारी रात
नगर के फाटक पर घात लगाए बैठे रहे. सारी रात वे चुपचाप
रहे. उनकी योजना थी: “हम सुबह होने का इंतजार करेंगे,
और भोर में हम उसकी हत्या कर देंगे.”

3 शिमशोन आधी रात तक सोता रहा, फिर वह उठा, नगर द्वार
के पल्लों को तथा दोनों मीनारों को पकड़ा, उन्हें उनकी छड़ों
सहित उखाड़कर अपने कंधों पर रखा और उन्हें उस पहाड़
की चोटी पर ले गया, जो हेब्रोन के सामने है.

4 इसके बाद, कुछ समय में उसे सोरेक घाटी की एक स्त्री से
प्रेम हो गया, जिसका नाम दलीलाह था.

5 फिलिस्तीनी के प्रधान दलीलाह से भेंटकरने आए और उसे
आज्ञा दी, “उसे फुसला कर यह मालूम करो कि उसकी इस
महान शक्ति का राज़ क्या है, और यह भी कि उसे कैसे बांधा
जा सकता है, ताकि उसे वश में किया जाए. यह होने पर हमसे
हर एक तुम्हें ग्यारह सौ चांदी के सिक्के देगा.”

6 दलीलाह ने शिमशोन से पूछा, “कृपया मुझे बताइए, आपकी
महान शक्ति का राज़ क्या है, आपको दबाने के लिए किस
प्रकार बांधा जा सकता है?”

7 शिमशोन ने उसे उत्तर दिया, “यदि वे मुझे सात ऐसी तांतों से
बांध दें, जिन्हें सुखाया नहीं गया है, तो मैं निर्बल हो जाऊंगा—
किसी भी दूसरे मनुष्य के समान साधारण.”

*Judges 16:1*

8 फिलिस्तीनी प्रधानों ने सात नई तांतें लाकर दलीलाह को दे
दी, जो सुखाई नहीं गई थी. दलीलाह ने शिमशोन को इनसे
बांध दिया.

9 उसने एक कमरे में कुछ व्यक्ति घात में बैठा रखे थे. वह
चिल्लाई, "शिमशोन, फिलिस्तीनी तुम्हें पकड़ने आ रहे हैं!"
किंतु शिमशोन ने उन तांतों को ऐसे तोड़ दिया जैसे आग लगते
ही धागा टूट जाता है. उसका बल रहस्य ही बना रहा.

10 दलीलाह ने शिमशोन से कहा, "देखिए, आपने मेरे साथ
छल किया है. आपने झूठ कहा है. कृपया मुझे बताइए कि
आपको किस प्रकार बांधा जा सकता है."

11 शिमशोन ने उसे उत्तर दिया, "यदि वे मुझे ऐसी रस्सियों से
बांधें, जिनका उपयोग पहले किया नहीं गया है, मैं किसी भी
अन्य व्यक्ति के समान निर्बल रह जाऊंगा."

12 तब दलीलाह ने वैसा ही किया. उसने शिमशोन को नई
रस्सियों से बांध दिया. यह करने के बाद वह चिल्लाई,
"शिमशोन! फिलिस्तीनी तुम्हें पकड़ने आ रहे हैं!" ये लोग
कमरे में इसकी प्रतीक्षा ही कर रहे थे. शिमशोन ने अपनी बाहों
पर बांधी गई इन रस्सियों को ऐसे तोड़ दिया, मानो उसकी बांहें
धागों से बांधी गई हों.

13 दलीलाह ने शिमशोन से कहा, "अब तक मेरे साथ झूठ और
छल ही करते रहे हैं. मुझे बताइए आपको बांधा कैसे जा
सकता है." शिमशोन ने उसे उत्तर दिया, "यदि मेरी सात लटों
को बुनकर खूंटी की सहायता से जकड़ दें, तो मैं निर्बल और
किसी भी दूसरे व्यक्ति के समान हो जाऊंगा!"

14 सो जब शिमशोन सो रहा था, दलीलाह ने उसकी सात लटों
को वस्त्र में बुन दिया और उन्हें खूंटी में फंसा दिया. फिर वह
चिल्लाई, "शिमशोन आपको पकड़ने के लिए फिलिस्तीनी आ
रहे हैं!" शिमशोन नींद से जाग उठा और करघे की खूंटी समेत
वस्त्र को खींचकर ले गया.

15 तब दलीलाह ने शिमशोन से कहा, "यह कैसे संभव है कि
आप मुझसे यह कहें, 'मुझे तुमसे प्रेम है,' जब आपका हृदय
मेरे प्रति सच्चा ही नहीं है? तीन बार आपने मुझसे छल किया
है, और मुझसे यह छिपाए रखा है कि आपकी अपार शक्ति
का राज़ क्या है."

16 तब वह उसे हर दिन सताने लगी. वह शिमशोन को इतना
मजबूर करने लगी कि शिमशोन की नाक में दम आ गया.

17 सो शिमशोन ने उसके सामने वह सब प्रकट कर दिया, जो
उसके हृदय में था. उसने दलीलाह को बताया, "मैं अपनी
माता के गर्भ से परमेश्वर के लिए नाज़ीर हूं. मेरे सिर पर कभी
भी उस्तरा नहीं लगाया गया है. यदि उस्तरे से मेरे केश साफ़
कर दिए जाएं, तो मैं निर्बल होकर साधारण मनुष्य समान हो
जाऊंगा."

18 जब दलीलाह को यह अहसास हुआ कि शिमशोन ने उस
पर अपने हृदय के सारे राज़ बता दिए हैं, उसने फिलिस्तीनी
प्रधानों को यह संदेश देते हुए बुलवा लिया, "एक बार और आ
जाइए, क्योंकि उसने मुझे सारा राज़ बता दिया है." तब
फिलिस्तीनी प्रधान उसके पास आए और अपने साथ वे सिक्के
भी ले आए.

19 उसने शिमशोन को अपने घुटनों पर सुला लिया, एक
आदमी को बुलवाकर उसकी सात लटों पर उस्तरा चलवा
दिया; शक्ति उसमें से जाती रही और दलीलाह उसे अपने वश
में करने लगी!

20 वह चिल्लाई, "शिमशोन, फिलिस्तीनी आपको पकड़ने आ
रहे हैं!" वह अपनी नींद से जाग उठा. उसने सोचा, "इसके
पहले के अवसरों के समान मैं अब भी एक झटके में स्वयं को
आज़ाद कर लूंगा." किंतु उसे यह मालूम ही न था कि याहवेह
उसे छोड़ गए हैं.

21 फिलिस्तीनी आए और उन्होंने उसे पकड़कर उसकी आंखें
निकाल डालीं. वे उसे अज्जाह ले गए और उसे कांसे की
बेड़ियों में जकड़ दिया. वह कारागार में चक्की चलाने लगा.

22 उसके सिर पर उस्तरा फेरे जाने के बाद अब उसके बाल
दोबारा बढ़ने लगे.

23 फिलिस्तीनी प्रधानों ने अपने देवता दागोन के सम्मान में
आनंद उत्सव और विशेष बलि का आयोजन किया. उनका
विचार था, "हमारे देवता ने हमारे शत्रु शिमशोन को हमारे
हाथों में सौंप दिया है."

24 जब लोगों ने शिमशोन को देखा, उन्होंने अपने देवता की
स्तुति में कहा, "हमारे देवता ने हमारे शत्रु को हमारे वश में

कर दिया है, वह हमारे देश को नाश करता रहा, उसने हमारी प्रजा के बहुतों को मार गिराया है."

25 जब वे इस प्रकार के उल्लास में लीन थे, उन्होंने प्रस्ताव किया, "शिमशोन को बुलवाया जाए कि वह हमारा मनोरंजन करे." तब उन्होंने कारागार से शिमशोन को बुलवाया और वह उनका मनोरंजन करने लगा. उन्होंने शिमशोन को मीनारों के बीच में खड़ा कर दिया.

26 वहां शिमशोन ने उस बालक से कहा, जो उसे चलाने के लिए उसका हाथ पकड़ा करता था, "मुझे उन मीनारों को छूने दो, जिन पर यह भवन टिका है, कि मैं उनका टेक ले सकूं."

27 इस समय वह भवन स्त्री-पुरुषों से भरा हुआ था, सभी फिलिस्तीनी शासक भी वहीं थे. छत पर लगभग तीन हज़ार स्त्री-पुरुष शिमशोन द्वारा किया जा रहा मनोरंजन का कार्य देख रहे थे.

28 जब शिमशोन ने याहवेह की यह दोहाई दी, "प्रभु याहवेह, कृपा कर मुझे याद कीजिए. परमेश्वर, बस एक ही बार मुझे शक्ति दे दीजिए, कि मैं फिलिस्तीनियों से अपनी दोनो आंखों का बदला ले सकूं."

29 शिमशोन ने दो बीच के मीनारों को पकड़ लिया, जिन पर पूरा भवन टिका था. उसने उन्हें मजबूती से जकड़ कर उन पर अपना सारा बोझ डाल दिया. उसका दायां हाथ एक खंभे को तथा बायां हाथ दूसरे को पकड़ा हुआ था.

30 शिमशोन ने विचार किया, "सही होगा कि मेरी मृत्यु फिलिस्तीनियों के साथ ही हो जाए!" वह अपनी पूरी शक्ति लगाकर झुक गया. तब यह हुआ कि वह भवन, प्रधानों और वहां जमा हुआ लोगों पर आ गिरा. इस प्रकार उनकी गिनती, जिनकी हत्या शिमशोन ने स्वयं अपनी मृत्यु के साथ की थी, उनसे अधिक हो गई, जिनकी हत्या शिमशोन ने अपने जीवन भर में की थी.

31 तब उसके भाई और उसके पिता के परिवार के सभी सदस्य वहां आ गए और उसे वहां से उठाकर ज़ोराह तथा एशताओल के बीच उसके पिता मानोहा की गुफा की कब्र में ले जाकर रख दिया. शिमशोन ने बीस साल इस्राएल का शासन किया था.

*Judges 17:1*

## Judges 17:1

1 एफ्राईम के पहाड़ी इलाके में मीकाह नामक एक व्यक्ति था.

2 उसने अपनी माता को बताया, "जो ग्यारह सौ चांदी के सिक्के मैंने आपसे लिए थे, जिनके कारण आपने मुझे सुनाकर शाप दिया था, देख लीजिए, वे मेरे पास हैं—उन्हें मैंने ही लिये थे." उसकी माता ने कहा, "याहवेह मेरे पुत्र को आशीषित करें!"

3 उसने ग्यारह सौ सिक्के अपनी माता को लौटा दिए. उसकी माता ने कहा, "मैं ये सारे सिक्के अपने हाथों से अपनी पुत्र के लिए याहवेह को भेंट में दे देती हूं, कि इनसे एक खोदी हुई और चांदी से ढाली गई मूर्ति बनाई जाए. इस काम के लिए अब मैं ये तुम्हें ही सौंप रही हूं."

4 जब उसने अपनी माता को सिक्के लौटाए, उसकी माता ने दो सौ सिक्के लेकर सुनार को दे दिए, कि वह उनसे खोदी हुई और चांदी ढाली हुई मूर्ति को बनाए. उस स्त्री ने इसे मीकाह के घर में स्थापित कर दिया.

5 इस व्यक्ति मीकाह ने एक वेदी बनाकर रखी थी. उसने एफ़ोद तथा परिवार से संबंधित मूर्तियों को बनाया. उसने अपने एक पुत्र को पुरोहित पद पर प्रतिष्ठित किया.

6 उन दिनों में इस्राएल देश में राजा नहीं होता था. हर एक व्यक्ति वही करता था, जो उसे सही लगता था.

7 यहूदाह गोत्र के यहूदिया प्रदेश के बेथलेहेम नगर में एक जवान लेवी रह रहा था.

8 यह व्यक्ति यहूदिया के बेथलेहेम को छोड़कर, रहने के लायक जगह को खोजने निकल पड़ा. खोजते हुए वह एफ्राईम के पहाड़ी इलाके में मीकाह के घर तक पहुंच गया.

9 मीकाह ने उससे पूछा, "आप कहां से आ रहे हैं?" उसने उत्तर दिया, "मैं लेवी हूं, और मैं यहूदिया के बेथलेहेम से आ रहा हूं. जहां कहीं मुझे सही जगह मिलेगी, मैं वहीं बस जाऊंगा."

10 मीकाह ने उसके सामने प्रस्ताव रखा, "आप मेरे यहां रह सकते हैं; आप मेरे लिए पिता और पुरोहित की भूमिका भी

कर सकते हैं. मैं आपको वार्षिक दर से दस चांदी के सिक्के, एक जोड़ा कपड़ा और भोजन दिया करूंगा."

11 लेवी इस पर सहमत हो गया. जवान लेवी मीकाह के लिए
उसके पुत्रों में से एक के समान हो गया.

12 तब मीकाह ने लेवी को शुद्ध किया, जवान लेवी उसके लिए
पुरोहित बन गया तथा वह मीकाह के ही घर में रहने लगा.

13 मीकाह ने कहा, "अब मुझे यह विश्वास हो गया है कि
याहवेह मुझे धनी बना देंगे; क्योंकि एक लेवी मेरे लिए पुरोहित
हो गया है."

## Judges 18:1

1 उन दिनों इस्राएल का कोई राजा न था. उन्हीं दिनों में दान
वंशजों ने अपने बसने के लिए सही ज़मीन की खोज करने
शुरू कर दी. अब तक उन्हें इस्राएल के गोत्रों के बीच कोई
ज़मीन नहीं दी गई थी.

2 अतः दान वंशजों ने अपने पूरे गोत्र की तरफ़ से पांच आदमी
भेजे. ये व्यक्ति ज़ोराह तथा एशताओल नामक नगरों से थे.
इन्हें वहां गुप्त रूप से जाकर भेद लेना था. उन्हें आदेश दिया
गया था, "जाओ, उस देश की छानबीन करो और उसका भेद
लो!" वे लोग खोजते हुए एफ़्राईम के पहाड़ी इलाके में मीकाह
के घर तक आ पहुंचे, और वे वहीं ठहर गए.

3 जब वे मीकाह के घर के पास पहुंचे, उन्होंने उस जवान लेवी
की आवाज पहचान ली. उन्होंने उसे अलग ले जाकर उससे
पूछा, "कौन तुम्हें यहां ले आया है? तुम यहां क्या कर रहे हो?
तुम्हारे पास यहां क्या है?"

4 लेवी ने उन्हें उत्तर दिया, "मीकाह ने मेरे लिए इतना सब
किया है! उन्होंने मुझे नौकरी पर रखा है. अब मैं उनका
पुरोहित हूं."

5 उन्होंने लेवी से विनती की, "कृपया परमेश्वर से यह मालूम
कर हमें बता दीजिए, कि हम जिस काम से निकले हैं, वह पूरा
होगा या नहीं."

6 पुरोहित ने उन्हें उत्तर दिया, "आप लोग शांतिपूर्वक जाइए.
आपके इस काम पर याहवेह का अनुग्रह है."

7 वे पांचों वहां से अपनी यात्रा पर निकल गए; और लायीश
नामक नगर को आए; और पाया कि वहां के रहनेवाले सुरक्षा
में रह रहे थे. वे सीदोनवासियों के समान शांत और सुरक्षित थे;
पूरे देश में किसी भी चीज़ की कमी न थी; वे समृद्ध लोग थे. वे
सीदोनिवासियों से दूर थे, इस कारण किसी के साथ उनका
कोई लेनदेन न था.

8 जब वे ज़ोराह तथा एशताओल में अपने भाइयों के पास लौटे,
तो उन्होंने उससे पूछा, "क्या समाचार लाए हो?"

9 उन्होंने उत्तर दिया, "उठिए, चलिए, हम उन पर हमला करें.
हमने उस देश का मुआयना कर लिया है. यह समृद्ध देश है.
क्या अब भी आप चुपचाप बैठे रहेंगे? न तो चलने में देरी
कीजिए, न वहां प्रवेश करने में, न उस देश को अपने अधीन
करने में.

10 जैसे ही आप उस देश में प्रवेश करेंगे, आपकी भेंट ऐसे
लोगों से होगी, जो आप पर किसी प्रकार से शक नहीं करेंगे.
यह देश बहुत फैला हुआ है. यह देश परमेश्वर ने आपके
अधीन कर दिया है, जहां पृथ्वी की किसी भी वस्तु की कमी
नहीं है."

11 इस तरह दान गोत्र के छः सौ योद्धा ज़ोराह तथा एशताओल
से निकल पड़े.

12 उन्होंने यहूदिया में जाकर किरयथ-यआरीम नामक स्थान
पर अपना पड़ाव खड़ा कर दिया. इस कारण वे आज तक उस
जगह को माहानेह-दान के नाम से जानते हैं; यह किरयथ-
जियारिम के पश्चिम में स्थित है.

13 वहां से निकलकर वे एफ़्राईम प्रदेश के पहाड़ी इलाके में
मीकाह के घर के पास जा पहुंचे.

14 तब उन पांच व्यक्तियों ने, जो लायीश का भेद लेने के लिए
भेजे गए थे, अपने साथियों से कहा, "क्या आप जानते हैं कि
इन घरों में एक एफ़ोद, गृह-देवताओं की मूर्तियां, एक खुदी
हुई और एक ढाली गई मूर्ति रखी है? इस कारण अच्छी तरह
से सोच-विचार कर लीजिए कि क्या करना सही है."

*Judges 19:1*

15 वे वहां के जवान लेवी वंशज पुरोहित के घर पर गए, जो उसे
मीकाह द्वारा दिया गया था. उन्होंने उसका कुशल समाचार
पूछा.

16 दान वंशज छः सौ योद्धा, प्रवेश फाटक पर खड़े रहे.

17 तब वे पांच पुरुष, जो इसके पहले यहां भेद लेने आ चुके थे,
वहां जाकर अंदर चले गए और जाकर खोदी हुई मूर्ति, एफ़ोद,
गृहदेवता और ढली हुई मूर्ति उठा ली. इस समय पुरोहित उन
छः सौ योद्धाओं के साथ प्रवेश फाटक पर खड़ा हुआ था.

18 जब ये लोग मीकाह के घर में जाकर खोदी हुई मूर्ति, एफ़ोद,
गृहदेवता और ढली हुई मूर्ति उठा रहे थे, पुरोहित ने उनसे
कहा, "आप लोग यह क्या कर रहे हैं?"

19 उन्होंने उससे कहा, "चुप रहो! अपना हाथ अपने मुंह पर
रखो. हमारे साथ चलकर हमारे लिए पिता और पुरोहित बन
जाओ. तुम्हारे लिए क्या अच्छा है; एक ही व्यक्ति के परिवार
के लिए पुरोहित बने रहना या इस्राएल के एक गोत्र और
परिवार के लिए पुरोहित होकर रहना?"

20 पुरोहित ने प्रसन्न हृदय से खोदी हुई मूर्तियां, एफ़ोद और
गृहदेवता की मूर्तियां अपने साथ लीं और उन लोगों के साथ
चल दिया.

21 वे लौट गए. उनके बालक, उनके पशु और उनकी सारी
मूल्यवान वस्तुएं उनके आगे-आगे जा रही थी.

22 जब वे मीकाह के घर से कुछ दूर जा चुके थे, मीकाह के
पड़ोसी इकट्ठे हुए और वे दान वंशजों के समूह के पास जा
पहुंचे.

23 उन्होंने दान वंशजों को पुकारा, जिन्होंने मुड़कर मीकाह से
पूछा, "क्या हो गया है आपको, जो आप इस तरह इकट्ठा हो
गए हैं?"

24 मीकाह ने उत्तर दिया, "आपने मेरे द्वारा बनाए देवता और
मेरे पुरोहित को ले लिया है, और आप इन्हें लेकर चले जा रहे
हैं, तो मेरे लिए क्या बचा है? फिर आप यह कैसे पूछ सकते हैं,
'क्या हो गया हैं?' "

25 दान वंशजों ने उनसे कहा, "सही यह होगा कि आपकी
आवाज हमारे बीच सुनी ही न जाए, नहीं तो हमारे क्रोधी
स्वभाव के लोग आप पर हमला कर देंगे और आप अपने
प्राणों से हाथ धो बैठेंगे, तथा आपके परिवार के लोग भी मारे
जाएंगे."

26 यह कहकर दान वंशजों का समूह आगे बढ़ गया. यहां जब
मीकाह ने यह देखा कि दान वंशज उनसे कहीं अधिक
शक्तिशाली हैं, वह अपने घर लौट गया.

27 मीकाह द्वारा बनी हुई वस्तुएं तथा मीकाह के पुरोहित को
साथ लिए हुए दान वंशज लायीश नामक स्थान पर पहुंचे. यहां
के निवासी कोमल स्वभाव के थे, जिन्होंने इन पर कोई भी शक
नहीं किया. दान वंशजों ने उन्हें तलवार से मारकर, उनके
नगर में आग लगाकर उसे भस्म कर दिया.

28 उनकी रक्षा के लिए वहां कोई नहीं आया, क्योंकि यह नगर
सीदोन से दूर बसा हुआ नगर था. इनका किसी से भी लेनदेन
न था. यह घाटी में बसा हुआ नगर था, जो बेथ-रीहोब के पास
था.

29 दान वंशजों ने नगर का नाम अपने मूल पुरुष के नाम पर
दान रखा, जो इस्राएल के पुत्र थे. इसके पहले इस नगर का
नाम लायीश था.

30 इसके बाद दान वंशजों ने अपने लिए खोदी हुई मूर्ति बना
ली. मनश्शेह का पौत्र, गेरशोम का पुत्र योनातन तथा उसके
पुत्र दान वंशजों के लिए पुरोहित बन गए तथा इस्राएल के
बंधुआई में जाने तक इसी पद पर रहते हुए सेवा करते रहे.

31 उन्होंने मीकाह की खोदी हुई मूर्ति को अपने लिए स्थापित
कर लिया और यह मूर्ति तब तक रही, जब तक शीलो में
परमेश्वर का भवन बना रहा.

## Judges 19:1

1 उन दिनों में, जब इस्राएल का कोई राजा न था. एफ्राईम के
दूर के पहाड़ी इलाके में एक लेवी निवास करता था. वह
यहूदियों के बेथलेहेम नगर से एक स्त्री ले आया कि वह स्त्री
उसकी उप-पत्नी हो जाए.

*Judges 19:1*

2 किंतु उसकी उप-पत्नी ने इस संबंध का विश्वासघात किया.
वह उसे छोड़ अपने पिता के यहां यहूदिया के बेथलेहेम में
चली गई जहां वह चार महीने तक रहती रही.

3 इस पर उसका पति अपने साथ एक सेवक और एक जोड़ा
गधे लेकर उससे मिलने निकल पड़ा, कि उसे प्रेमपूर्वक
समझा कर अपने साथ लौटा ले आए. उसने अपने पति को
अपने पिता के घर में ठहरा लिया. जब उसके पिता ने उसके
पति को देखा तो वह आनंदित हुआ.

4 उस लेवी के ससुर ने उसे रोक लिया. लेवी वहां तीन दिन
ठहरा रहा. वे वहां खाते-पीते ठहरे रहे.

5 चौथे दिन वे बड़े तड़के उठ गए, और लेवी यात्रा के लिए
तैयार हुआ. स्त्री के पिता ने अपने दामाद से विनती की, "थोड़ा
भोजन करके शरीर में ताकत आने दो, फिर चले जाना."

6 तब वे दोनों बैठ गए. उन्होंने साथ साथ खाया पिया. स्त्री के
पिता ने लेवी से कहा, "कृपया यहां और एक रात बिताने के
लिए राज़ी हो जाओ, और अपने हृदय को आनंद करने दो."

7 एक बार फिर वह व्यक्ति यात्रा के लिए निकलने लगा, मगर
उसके ससुर की विनती पर उसे दोबारा वहीं रात बितानी पड़ी.

8 पांचवें दिन बड़े तड़के वह यात्रा के लिए निकलने लगा. स्त्री
के पिता ने उससे विनती की, "कृपा कर अपना जी ठंडा करो
और शाम तक और ठहर जाओ." सो उन दोनों ने भोजन
किया.

9 जब वह व्यक्ति अपने सेवक और उप-पत्नी के साथ यात्रा के
लिए निकलने लगा, स्त्री के पिता, उसके ससुर ने उससे कहा,
"देखो, दिन ढल ही चुका है. अब रात यहीं बिता लो. देख, दिन
खत्म ही हो चुका है. अपने जी को ठंडा कर लो. कल सुबह
जल्दी उठकर यात्रा शुरू करना कि तुम अपने घर पहुंच
सको."

10 मगर वह व्यक्ति अब वहां रात बिताने के लिए तैयार न था.
सो वह अपनी यात्रा पर निकल पड़ा. चलते हुए वे येबूस अर्थात्
येरूशलेम के पास एक जगह पर पहुंचे. उसके साथ एक
जोड़ा लकड़ी कसे हुए गधे थे, तथा उसकी उप-पत्नी भी उसके
साथ थी.

11 येबूस पहुंचते हुए दिन लगभग ढल ही चुका था. सेवक ने
अपने स्वामी से कहा: "कृपया हम यहीं रुक कर इस नगर में
चले जाएं तथा यबूसियों के इस नगर में रात बिता लें."

12 मगर उसके स्वामी ने उससे कहा, "हम इन विदेशियों के
नगर में आसरा नहीं लेंगे. ये इस्राएल वंशज नहीं हैं. हां, हम
गिबियाह तक चले चलते हैं."

13 अपने सेवक से उसने कहा, "आओ, हम इनमें से किसी एक
जगह को चलें. हम गिबियाह अथवा रामाह में रात बिताएंगे."

14 इस कारण वे वहां से आगे बढ़ गए, और गिबियाह पहुंचते
हुए सूरज भी ढल गया; गिबियाह बिन्यामिन इलाके में था.

15 वे नगर में प्रवेश के लिए मुड़े कि नगर में ठहर सकें. नगर
में प्रवेश कर वे नगर चौक की खुली जगह में जाकर बैठ गए;
क्योंकि किसी ने भी उन्हें रात बिताने के लिए अपने घर में न
बुलाया.

16 खेत में दिन का काम खत्म कर एक बूढ़ा व्यक्ति उसी ओर
आ रहा था. यह व्यक्ति एफ्राईम के पहाड़ी इलाके से ही था
और गिबियाह में रह रहा था, जबकि यह बिन्यामिन वंशजों का
नगर था.

17 जब उस बूढ़े व्यक्ति की नज़र नगर चौक में इन यात्रियों पर
पड़ी, उसने पूछा, "आप कहां जा रहे हैं और आप कहां से आए
हैं?"

18 उसने उत्तर में कहा, "हम लोग यहूदिया के बेथलेहेम से
एफ्राईम के पहाड़ी इलाके की एक दूर की जगह को जा रहे
हैं, क्योंकि मैं वहीं का रहनेवाला हूं. मैं यहूदिया के बेथलेहेम
नगर को गया हुआ था. ठहरने की जगह देने के लिए किसी ने
मुझे नहीं बुलाया.

19 मेरे पास अपने गधों के लिए चारा और हमारे लिए भोजन
तथा अंगूर का रस है. आपकी सेविका तथा आपके सेवक के
साथ जो युवक है, हमें किसी वस्तु की आवश्यकता नहीं है."

20 बूढ़े व्यक्ति ने उनसे कहा, "शांति तुम पर बनी रहे. मैं
तुम्हारी सभी ज़रूरतें पूरी करूंगा, मगर इस खुले चौक में रात
न बिताना."

21 सो वह उन्हें अपने घर ले गया, गधों को चारा दिया, उन्होंने
अपने पांव धोए और भोजन किया.

22 जब वे आनंद कर ही रहे थे, नगर के कुछ लुच्चे लोगों ने
आकर उस घर को घेर लिया. वे दरवाजे पर वार कर रहे थे.
उन्होंने उस घर के स्वामी, उस बूढ़े व्यक्ति से कहा, "उस
व्यक्ति को बाहर भेजो कि हम उसके साथ शारीरिक संबंध
बना सकें."

23 इस पर घर के स्वामी ने बाहर आकर उनसे कहा, "नहीं,
मेरे भाइयो, ऐसा कुकर्म न करो. यह व्यक्ति मेरा मेहमान है,
ऐसा मूर्खता भरा कदम न उठाओ!

24 यहां मेरी कुंवारी बेटी है और मेरे अतिथि की उप-पत्नी भी.
तुम उन्हें भ्रष्ट कर सकते हो और जैसा तुम्हें सही लगे, कर
सकते हो; किंतु इस व्यक्ति के साथ यह शर्मनाक काम मत
करो!"

25 किंतु वे तो उसकी सुनने के लिए तैयार ही न थे. इस कारण
लेवी ने अपनी उप-पत्नी को पकड़कर उनके सामने खड़ा कर
दिया. वे सुबह होने तक पूरी रात उसके साथ बलात्कार तथा
दुर्व्यवहार करते रहे. सुबह होने पर उन्होंने उसे छोड़ दिया.

26 जब सूरज उग ही रहा था, वह स्त्री उस बूढ़े व्यक्ति के
दरवाजे पर जा गिरी, जहां पूरी तरह रोशनी होने तक उसका
स्वामी ठहरा हुआ था.

27 जब इस स्त्री का स्वामी सुबह उठा, उसने द्वार खोले और
वह अपनी यात्रा के लिए निकला, उसने देखा कि उसकी उप-
पत्नी सीढ़ियों पर पड़ी हुई थी; उसने अपने हाथों से डेवढ़ी थाम
रखी थी.

28 लेवी ने उसे पुकारा, "उठो, अब हमें चलना है." किंतु उसे
उससे कोई उत्तर न मिला; वह मर चुकी थी. लेवी ने उसे गधे
पर लाद दिया और अपने घर लौट गया.

29 घर पहुंचकर उसने चाकू लेकर अपनी उप-पत्नी के शरीर
के बारह टुकड़े कर दिए और उन्हें इस्राएल के सभी प्रदेशों में
भेज दिए.

30 जिस किसी ने यह देखा, उसने यही कहा, "जब से इस्राएल
मिस्र देश से निकलकर यहां पहुंचा है, उस दिन से न तो ऐसा
कभी हुआ है, न ही ऐसा कभी देखा गया. इस पर विचार करो.
हमें कुछ करना चाहिए! और उसके विरुद्ध आवाज उठाई
जाए!"

## Judges 20:1

1 फलस्वरूप दान से बेअरशेबा तक सारे इस्राएली, जिनमें
गिलआदवासी भी शामिल थे, बाहर निकल आए. उन्होंने
एकजुट होकर मिज़पाह में याहवेह के सामने सभा रखी.

2 लोगों के सभी प्रमुखों और यहां तक के सभी गोत्रों के प्रमुखों
ने, जो तलवार चलाने में निपुण चार लाख पैदल सैनिक थे,
परमेश्वर के लोगों की इस सभा में एक प्रण लिया.

3 यहां बिन्यामिन वंशजों ने यह सुन लिया था कि इस्राएल
वंशज मिज़पाह में इकट्ठा हुए हैं. इस्राएलियों ने उस लेवी से
पूछा, "हमें बताओ, यह कुकर्म हुआ कैसे?"

4 जिस स्त्री की हत्या कर दी गई थी, उसका पति, जो लेवी था,
कहने लगा, "यात्रा करते हुए में अपनी उप-पत्नी के साथ
गिबियाह पहुंचा, जो बिन्यामिन प्रदेश में है, जहां हमें रात
बितानी ज़रूरी हो गई थी.

5 मगर गिबियाह के पुरुष मेरे विरुद्ध चढ़ आए और उन्होंने
रात में मेरे कारण उस घर को घेर लिया. वे तो मेरी हत्या करना
चाह रहे थे, किंतु उन्होंने मेरी उप-पत्नी के साथ बलात्कार
किया, फलस्वरूप उसकी मृत्यु हो गई.

6 मैंने अपनी उप-पत्नी के शव को लिया, उसके टुकड़े किए
और उसके इन टुकड़ों को इस्राएल के सभी प्रदेशों में भेज
दिया, क्योंकि उन्होंने इस्राएल में यह कामुक, शर्मनाक काम
किया है.

7 इस्राएल के सभी वंशजों, इस विषय में अपनी राय और
सलाह दीजिए."

8 सारी प्रजा एकजुट हो गई. उन्होंने निश्चय किया, "हममें से
कोई भी न तो अपने तंबू को और न ही अपने घर को लौटेगा.

*Judges 20:1*

9 गिबियाह के संबंध में हमारा निर्णय है कि पासा फेंकने के
द्वारा हम मालूम करेंगे कि गिबियाह पर आक्रमण के लिए
कौन जाएगा.

10 हम इस्राएल के हर एक गोत्र से सौ में से दस व्यक्ति अपने
साथ ले लेंगे, अर्थात् एक हज़ार में से एक सौ, अर्थात् दस हज़ार
में से एक हज़ार, कि वे सेना के खाने-पीने की व्यवस्था करें.
जब वे सेना बिन्यामिन प्रदेश के गेबा में पहुंचे, वे उन्हें इस्राएल
देश में किए गए सभी शर्मनाक कामों के लिए दंड दें."

11 इस प्रकार इस्राएल के सारे योद्धाओं ने एकजुट होकर इस
नगर को घेर लिया.

12 तब इस्राएल के गोत्रों ने सारे बिन्यामिन गोत्र के लिए अपने
प्रतिनिधियों द्वारा यह संदेश भेजा, "तुम्हारे बीच यह कैसा
दुष्टता भरा काम किया गया है?

13 गिबियाह में रह रहे उन निकम्मे व्यक्तियों को हमें सौंप दो,
कि हम उन्हें मृत्यु दंड दें, और इस्राएल में हुई इस दुष्टता को
मिटा डाले." मगर बिन्यामिन वंशजों ने अपने इस्राएली भाइयों
की एक न सुनी.

14 बिन्यामिन वंशज अपने-अपने नगरों से आकर गिबियाह में
इकट्ठे हुए कि वे इस्राएल वंशजों से युद्ध करें.

15 उस दिन विभिन्न नगरों से बिन्यामिन के तलवार चलाने में
निपुण जो योद्धा इकट्ठे हुए, उनकी गिनती छब्बीस हज़ार थी.
इनके अलावा गिबियाह नगर के ही सात सौ योद्धा इनमें
शामिल हो गए.

16 इनमें सात सौ शूर योद्धा ऐसे थे, जो अपने बाएं हाथ के
इस्तेमाल के प्रवीण थे. इनमें से हर व्यक्ति एक बाल तक पर
भी अचूक निशाना साध सकता था.

17 दूसरी ओर बिन्यामिन वंशजों के अलावा इस्राएली सेना में
चार लाख कुशल शूर योद्धा थे.

18 सारी इस्राएली सेना बेथेल गई कि परमेश्वर की इच्छा जान
सके. उन्होंने परमेश्वर से पूछा, "बिन्यामिन वंशजों से युद्ध
करने सबसे पहले हमारी ओर से कौन जाएगा?" याहवेह ने
उत्तर दिया, "सबसे पहले यहूदाह का जाना सही होगा."

19 इसलिये इस्राएल वंशजों ने बड़े तड़के जाकर गिबियाह के
विरुद्ध पड़ाव डाला.

20 इस्राएल वंशज बिन्यामिन के विरुद्ध युद्ध के लिए निकले.
उन्होंने गिबियाह के विरुद्ध युद्ध के लिए मोर्चा बांध दिया.

21 बिन्यामिन के सैनिक गिबियाह नगर से बाहर आए और
इस्राएल के बाईस हज़ार योद्धाओं को मार गिराया.

22 किंतु इस्राएल के सैनिकों ने अपना मनोबल बनाए रखते हुए
दूसरे दिन भी उसी स्थान पर मोर्चा लिया, जहां पहले दिन
लिया था.

23 इस्राएल वंशज जाकर शाम तक याहवेह के सामने रोते रहे.
उन्होंने याहवेह से पूछा, "क्या हम अपने बंधु बिन्यामिन वंशजों
पर दोबारा हमला करें?" याहवेह ने उन्हें उत्तर दिया, "जाकर
उन पर हमला करो."

24 दूसरे दिन इस्राएल वंशजों ने बिन्यामिन वंशजों पर हमला
कर दिया.

25 गिबियाह नगर से बिन्यामिन वंशजों ने बाहर जाकर
इस्राएली सेना के अठारह हज़ार सैनिकों को मार गिराया. ये
सभी तलवार चलाने में कुशल थे.

26 इसलिये इस्राएल वंशज और सभी प्रजा के लोग बेथेल गए
और वहां जाकर रोते रहे. वे सारे दिन शाम तक याहवेह के
सामने भूखे रहे. वहां उन्होंने याहवेह को होमबलि और मेल
बलि भेंट की.

27 इस्राएल वंशजों ने याहवेह से प्रश्न किया. (उन दिनों परमेश्वर
के वाचा का संदूक बेथेल में ही था.)

28 अहरोन का पोता, एलिएज़र का पुत्र फिनिहास संदूक के
सामने सेवा के लिए चुना गया था. इस्राएल वंशजों ने याहवेह
से पूछा, "क्या हम अब भी अपने बंधु बिन्यामिन पर हमला
करने जाएं या यह विचार त्याग दें?" याहवेह ने उत्तर दिया,
"जाओ, कल मैं उन्हें तुम्हारे हाथों में सौंप दूंगा."

*Judges 20:1*

29 फिर इस्राएल ने गिबियाह नगर के आस-पास सैनिकों को
घात लगाने के लिए बैठा दिया.

30 तीसरे दिन इस्राएल वंशजों ने बिन्यामिन वंशजों पर हमला
करने के लिए गिबियाह के विरुद्ध मोर्चा बांधा, जैसा उन्होंने
इसके पहले भी किये थे.

31 जब बिन्यामिन वंशज उनकी सेना पर हमला करने बाहर
आए, पीछे हटती इस्राएली सेना उन्हें नगर से दूर ले जाने लगी.
बिन्यामिन वंशज इस्राएली सैनिकों पर पहले जैसे ही वार
करने लगे. प्रमुख मार्गों पर, जो बेथेल तथा गिबियाह को जाते
थे, तथा खेतों में लगभग तीस इस्राएली सैनिक मार डालें गए.

32 बिन्यामिन वंशजों का विचार था, "पहले जैसे ही वे हमारे
सामने मार गिराए जा रहे हैं." मगर इस्राएली सैनिकों ने कहा,
"आओ, हम भागना शुरू करें कि उन्हें नगर से दूर मुख्य मार्गों
पर ले आएं."

33 तब सभी इस्राएली सैनिक अपने-अपने स्थानों से
निकलकर बाल-तामार नामक स्थान पर युद्ध में शामिल हो
गए. वे भी, जो घात लगाए बैठे थे, बाहर निकल आए, वे भी जो
मआरोह-गीबा में थे.

34 जब सारे इस्राएल से चुने गए दस हज़ार सैनिकों ने गिबियाह
पर हमला किया, युद्ध बहुत ही प्रचंड हो गया; मगर बिन्यामिन
वंशजों को यह तनिक भी अहसास न था कि महाविनाश
उनके पास आ चुका था.

35 याहवेह ने इस्राएल के सामने बिन्यामिन को मार गिराया.
उस दिन इस्राएल ने पच्चीस हज़ार एक सौ बिन्यामिनी सैनिकों
को मार गिराया. ये सभी तलवार चलाने में निपुण थे.

36 बिन्यामिन वंशजों को अपनी पराजय स्वीकार करनी पड़ी.
जब इस्राएली सैनिक बिन्यामिन वंशजों से पीछे हट गये,
क्योंकि वे पूरी तरह उन सैनिकों पर निर्भर थे, जो गिबियाह के
विरुद्ध घात लगाए बैठे हुए थे,

37 तब घात लगाए सैनिक बड़ी ही तेजी से गिबियाह नगर पर
टूट पड़े. वे सारे नगर में फैल गए और पूरे नगर को तलवार से
मार डाला.

38 इस्राएली सैनिकों और घात लगाए सैनिकों के बीच पहले से
तय किया गया संकेत यह था कि वे नगर में आग लगाकर धुएं
का बहुत बड़ा बादल उठाएंगे,

39 तब यह देखते ही इस्राएली सेना का प्रमुख दल को युद्ध-
भूमि में लौट आना है. बिन्यामिन सैनिकों ने लगभग तीस
इस्राएली सैनिकों को मार गिराया था. उनका विचार था,
"निश्चित ही पहले के युद्ध के समान ये लोग हमसे हार चुके हैं."

40 मगर जैसे ही नगर के ऊपर धुएं का खंभा उठने लगा,
बिन्यामिन वंशजों ने मुड़कर देखा कि पूरा नगर धुएं में
आकाश की ओर उठ रहा है.

41 इस्राएली सैनिक पलट कर वार करने लगे और बिन्यामिन
वंशज भयभीत हो गए, क्योंकि उन्हें साफ़ दिख रहा था कि उन
पर महाविनाश आ पड़ा है.

42 अब वे इस्राएली सेना को पीठ दिखाकर निर्जन प्रदेश की
ओर भागने लगे; किंतु वे विनाश से बच न सके. उन्होंने, जो
नगरों से निकल आए थे, उन्हें अपने बीच में मारना शुरू कर
दिया.

43 उनका पीछा करते हुए उन्होंने बिन्यामिन वंशजों को घेर
लिया, बिना रुके गिबियाह के पास पूर्व में, खदेड़ कर उन्हें रौंद
डाला.

44 इस युद्ध में बिन्यामिन के अट्ठारह हज़ार सैनिक गिरे. ये
सभी वीर योद्धा थे.

45 बाकी पीठ दिखाकर निर्जन प्रदेश में रिम्मोन की चट्टान की
ओर भागे, मगर इनमें से पांच हज़ार मुख्य मार्गों पर पकड़
लिए गए, और उन्हें गीदोम नामक स्थान पर पकड़कर उनमें
से दो हज़ार का वध कर दिया गया.

46 इसलिये उस दिन वध किए सैनिकों की सारी गिनती पच्चीस
हज़ार हो गई. से सभी कुशल हज़ार सैनिक थे-तलवार चलाने
में निपुण.

47 मगर छः सौ सैनिक मुड़कर निर्जन प्रदेश में रिम्मोन की
चट्टान की दिशा में भागे. वे रिम्मोन की चट्टान के निकट चार
महीने तक रहते रहे.

48 तब इस्राएली सेना बिन्यामिन वंशजों के नगरों की ओर बढ़ें
और सभी को तलवार से वध कर दिया. सारे नगर नाश कर
दिए गए, उन्होंने जो भी मिला, नगरवासी और पशुओं सभी का
वध कर दिया. उन्हें जितने नगर मिलते गए, वे उनमें आग
लगाते चले गए.

## Judges 21:1

1 इस्राएल वंशजों ने मिज़पाह में यह संकल्प लिया था, "हममें
से कोई भी अपनी पुत्री बिन्यामिन वंशज को विवाह में नहीं
देगा."

2 इसलिये प्रजा के लोग बेथेल जाकर शाम तक परमेश्वर के
सामने बैठे रहे, और ऊंची आवाज में रोते रहे.

3 वे इसी विषय पर विचार करते रहे थे, "याहवेह, इस्राएल के
परमेश्वर, इस्राएल में क्यों ऐसी स्थिति आ गई, कि आज
इस्राएल में से एक गोत्र मिट गया है?"

4 दूसरे दिन लोगों ने तड़के उठकर एक वेदी बनाई तथा उस
पर होमबलि तथा मेल बलि भेंट की.

5 इस्राएल वंशजों ने यह पूछताछ की, "इस्राएल के सारे गोत्रों
में से ऐसा कौन है, जो इस सभा में याहवेह के सामने नहीं आया
है?" क्योंकि उन्होंने बड़ी गंभीरता पूर्वक यह शपथ ली थी, "जो
कोई मिज़पाह में याहवेह के सामने उपस्थित न होगा, उसे
निश्चित ही प्राण-दंड दिया जाएगा."

6 इस्राएल वंशज अपने बंधु बिन्यामिन वंशजों के लिए खेदित
होकर यही विचार कर रहे थे, "आज इस्राएल में से एक गोत्र
मिटा दिया गया है.

7 अब वे, जो बाकी रह गए हैं, उनकी पत्नियों के लिए हम क्या
करें, क्योंकि हमने याहवेह के सामने यह शपथ ले रखी है, कि
हममें से कोई भी विवाह के लिए उन्हें अपनी पुत्रियां नहीं
देगा?"

8 जब वे पूछताछ कर रहे थे, "इस्राएल के गोत्रों में वह कौन है,
जो मिज़पाह में याहवेह के सामने उपस्थित नहीं हुआ है?" यह
पाया गया कि याबेश-गिलआद से इस सभा के लिए शिविर में
कोई भी उपस्थित न हुआ था.

9 क्योंकि जब गिनती की गई, यह मालूम हुआ कि याबेश-
गिलआद का एक भी निवासी वहां न था.

10 इसलिये इस सभा के द्वारा बारह हज़ार वीर योद्धाओं के
दल को वहां भेजा गया. उनके लिए आदेश था, "जाओ, और
याबेश-गिलआदवासियों को स्त्रियों और बालकों सहित
तलवार से मार डालो.

11 तुम्हें करना यह होगा: तुम्हें हर एक पुरुष को मार गिराना
है और हर एक उस स्त्री को भी, जो पुरुष से संबंध बना चुकी
है."

12 उन्हें याबेश-गिलआद निवासियों में चार सौ ऐसी कुंवारी
कन्याएं मिलीं जिनका किसी पुरुष से संबंध नहीं हुआ था. इन्हें
वे शीलो की छावनी में ले आए, यह कनान देश में था.

13 तब सारी सभा ने उन बिन्यामिन वंशजों को, जो रिम्मोन
चट्टान के क्षेत्र में आसरा लिए हुए थे, संदेश भेजा और उनके
साथ शांति की घोषणा की.

14 तब बिन्यामिन के वे वंशज लौट आए और उन्हें वे कन्याएं
दे दी गईं, जिन्हें याबेश-गिलआद में सुरक्षित रखा गया था.
फिर भी कन्याओं की संख्या उनके लिए पूरी न थी.

15 ये सभी बिन्यामिन गोत्र की स्थिति के लिए दुःखी थे, क्योंकि
याहवेह ने इस्राएल के गोत्रों के बीच फूट पैदा कर दी थी.

16 तब सभा के प्रमुखों ने विचार-विमर्श किया, "बचे हुए पुरुषों
के लिए पत्नियों का प्रबंध करने के लिए अब क्या किया जाए,
क्योंकि बिन्यामिन प्रदेश से स्त्रियों को मारा जा चुका है?"

17 उन्होंने विचार किया, "बिन्यामिन के बचे हुओं के लिए
उत्तराधिकार का होना ज़रूरी है, कि इस्राएल का एक गोत्र
मिट न जाए.

18 यह तो संभव नहीं है कि हम उन्हें विवाह में अपनी पुत्रियां
दे दें. क्योंकि इस्राएल वंशजों ने यह शपथ ली थी, 'शापित होगा
वह, जो बिन्यामिन वंशजों को विवाह में अपनी पुत्री देगा.'

*Judges 21:1*

19 इसलिये उन्होंने विचार किया, शीलो में, जो बेथेल के उत्तर
में, याहवेह का सालाना उत्सव होनेवाला है. यह बेथेल से
शेकेम जाते हुए राजमार्ग के पूर्वी ओर लेबोनाह के दक्षिण में
है."

20 उन्होंने बिन्यामिन वंशजों को आदेश दिया, "जाकर अंगूर
के बगीचों में छिप जाओ.

21 इंतजार करते रहना. यह देखना कि जैसे ही शीलो की
युवतियां नृत्य में शामिल होने आएं, तुम अंगूर के बगीचों से
बाहर निकल आना, और तुममें से हर एक शीलो की इन
नवयुवतियों में से अपनी पत्नी बनाने के लिए एक नवयुवती
उठा लेना. फिर बिन्यामिन की भूमि पर लौट जाना.

22 फलस्वरूप उनके पिता और भाई हमारे पास शिकायत
लेकर आएंगे. तब हम उन्हें उत्तर देंगे, 'अब अपनी इच्छा से ही
अपनी पुत्रियां उन्हीं के पास रहने दीजिए. युद्ध के समय हमने
बिन्यामिन वंशजों के लिए कन्याएं नहीं छोड़ी, और न ही
आपने अपनी पुत्रियां उन्हें दी, नहीं तो आप दोषी हो जाते.' "

23 बिन्यामिन वंशजों ने ऐसा ही किया. उन्होंने अपनी गिनती
के अनुसार नृत्य करती युवतियों में से युवतियां उठा लीं और
अपने साथ उन्हें ले गए. वे अपने तय किए गए विरासत में लौट
गए. उन्होंने नगरों को दोबारा बनाया और वे उनमें बस गए.

24 इस समय शेष इस्राएल वंशज वहां से चले गए, हर एक
अपने-अपने कुल और परिवार को, हर एक अपनी-अपनी
मीरास को.

25 उन दिनों इस्राएल देश में राजा नहीं होता था. हर एक
व्यक्ति वही करता था, जो उसे सही लगता था.